Daily THE PHOTON NEWS

सच के हक में...

Published from Ranchi

Ranchi ● Sunday, 25 June 2023 ● Year : 01 ● Issue : 159 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com

E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

जो गुणज्ञ न हो, उसके सामने गुण नष्ट हो जाता है और कृतघ्न के साथ की गई उदारता नष्ट हो जाती है।

अचानक मिली थी एनिमल

SHARE

सेंसेक्स	:	62,979.37
निफ्टी	:	18,665.50

SARAFA

सोना	:	5,555
चांदी	:	74.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

कल से बदल जाएगा सिविल कोर्ट में कामकाज का समय, मॉर्निंग कोर्ट खत्म

RANCHI : सोमवार से राज्य भर के जिला अदालतों में सुनवाई का समय बदल जाएगा। फिलहाल झारखंड की निचली अदालतों में मॉर्निंग कोर्ट में सुनवाई हो रही है, लेकिन यह व्यवस्था सोमवार से बदल जाएगी। रांची सिविल कोर्ट समेत झारखंड के सभी जिला न्यायालयों में 5 अप्रैल से मॉर्निंग कोर्ट में मुकदमों की सुनवाई हो रही थी। लेकिन अब झारखंड हाईकोर्ट ने पत्र जारी कर डे कोर्ट में सुनवाई शुरू करने की सूचना जारी कर दी है। डे कोर्ट में अदालत के कामकाज का समय सुबह 10:30 से लेकर शाम के 5 बजे तक निर्धारित किया गया है। करीब दो महीने से ज्यादा समय से मॉर्निंग कोर्ट में सुनवाई चल रही थी।

जयंत अग्रवाल के चार फ्लैट की खरीद-बिक्री पर ईडी ने लगायी रोक

RANCHI : मनी लाउंड्रिंग के आरोप का सामना कर रहे सीएनआइ(चर्च आफ नार्थ इंडिया) के पूर्व कोषाध्यक्ष व रांची निवासी जयंत अग्रवाल के बहुबाजार स्थित सीएनआइ हाइट्स के चार फ्लैट 201, 202, 203 और 204 की खरीद-बिक्री पर प्रवर्तन निदेशालय(ईडी) ने रोक लगा दी है। यह कार्रवाई प्रवर्तन निदेशालय की भोपाल टीम ने की है। इसको लेकर ईडी ने रांची के निबंधन कार्यालय को पत्र भेजा है। रांची के निबंधन कार्यालय को भेजे पत्र में ईडी ने कहा है कि सीएनआइ हाइट्स के उक्त फ्लैट्स की खरीद-बिक्री से पूर्व अनुमति ले लें। ये सभी फ्लैट जयंत अग्रवाल की बेटी जेनिफर सेफाली अग्रवाल के नाम पर खरीदी गई है।

पश्चिमी सिंहभूम में आईईडी और स्पाइक होल बरामद

CHAIBASA : जिले के तुम्बाहाका एवं सरजोमबुरु में नक्सलियों ने पुलिस को नुकसान पहुंचाने के लिए रास्ते में आईईडी बम और स्पाइक होल लगाया था, जिसे सर्च अभियान के दौरान सुरक्षाबलों ने बरामद कर जंगल में नष्ट कर दिया। इसके बाद सुरक्षा बल के जवानों ने सरजोमबुरु गांव में एक कैंप लगाकर ग्रामीणों का साथ भोजन किया।ग्रामीणों ने पुलिस को बताया कि गांव में कुछ लोग बीमार हैं। इसके बाद सुरक्षा बल के जवानों ने एक कैंप लगाकर बीमार लोगों का जांच उपरांत दवा मुहैया कराया गया।

बंगाल की खाड़ी में बन रहा चक्रवात, राज्य में होगी तेज बारिश

झारखंड में MONSOON के प्रवेश के बाद तापमान में गिरावट, कई इलाकों में मूसलाधार बारिश का इंतजार

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड में मानसून लगभग पूरी तरह फैल गया है। उत्तर पश्चिमी भाग के कुछ क्षेत्रों को छोड़कर राज्य के कई हिस्सों में मानसून का असर भी दिखने लगा है। मौसम विभाग ने 25 और 26 जून को पलामू और राज्य के दक्षिणी और इससे सटे मध्य भागों में बारिश की संभावना जाहिर की है। पिछले 24 घंटे में राज्य के कई हिस्सों में बारिश हुई है।

झारखंड में छाए बादल।

अभी भी रांची में तेज बारिश का इंतजार

राजधानी रांची में मौसम ने अपना मिजाज बदला है लेकिन अब तक तेज बारिश नहीं हुई। रांची में अब भी गर्मी सता रही है। आसमान में बादल छाए हुए हैं, कई बार हल्की बारिश भी हुई लेकिन अबतक राजधानी रांची तेज बारिश का इंतजार कर रही है। मौसम विभाग ने संभावना जताई है कि अगले 24 घंटे में रांची सहित कई इलाकों मे तेज बारिश हो सकती है। अगले पांच दिनों के दौरान प्रदेश के सभी हिस्सों में बारिश होने की संभावना है।

कहां कितनी हुई बारिश

मौसम विभाग ने कहा, राज्य में पिछले 24 घंटों के दौरान सबसे अधिक बारिश लातेहार में हुई है। चंदवा में 65.0 मिमी बारिश हुई है। राज्य के जिन हिस्सों में बारिश हुई है उनमें गढ़वा 56.5 मिलीमीटर, चाईबासा 31.2 मिमी, गुमला बिशुनपुर में 30.0, रांची के खलारी में 28.4, जमशेदपुर 17.6, लोहरदगा 16.2, देवघर 11.0, बरकागांव 15.0, चक्रधरपुर 13.2, भरनो में 14.2 मिमी बारिश हुई। अब भी राज्य के कई हिस्सो में बारिश हो रही है। बंगाल की खाड़ी में एक चक्रवात बन रहा है इसका असर दिखेगा। झारखंड में मानसून प्रवेश करने के बाद से ही राज्य के कई जिलों के तापमान में गिरावट आयी है। बारिश के बाद अधिकतम तापमान चार से पांच डिग्री सेसि में गिरावट आने की

वज्रपात की आशंका से 44 हजार स्कूलों में बढ़ी चिंता

RANCHI : मौसम विभाग के मुताबिक झारखंड में मॉनसून प्रवेश कर चुका है। वहीं 25 जून से भारी बारिश की संभावना भी जतायी गयी है। भारी बारिश के बीच बिजली गिरने की भी बात कही गयी है। वहीं आज से राज्य के स्कूलों में पढ़ाई भी शुरू हो चुकी है। भारी बारिश और बिजली गिरने के पूवार्नुमान के बीच एक बार फिर 44 हजारों सरकारी स्कूलों की सुरक्षा को लेकर चिंता सामने आ रही है। सुरक्षा की यह चिंता आकाशीय बिजली गिरने की है। ऐसा इसलिए है क्योंकि राज्य के सरकारी स्कूलों में तड़त चालक है ही नहीं। बीते 10 सालों में राज्य के अधिकांश स्कूलों में लगे तड़ित चालक या तो काम नहीं कर रहे हैं या फिर चोरी हो चुके हैं। बच्चों की सुरक्षा को लेकर स्कूलों में लगभग 10 साल पहले तड़त चालक लगाए गए थे। इसके बाद से स्कूलों में लगे तड़ित चालक या तो खराब हो

पुतिन के खिलाफ विद्रोह आगे बढ़ रही वैगनर सेना

एक और शहर पर किया कब्जा, मॉस्को की ओर दौड़ रहे टैंक

AGENCY MOSCOW : यूक्रेन जंग में रूस का साथ देने वाली प्राइवेट आर्मी वैगनर ने विद्रोह कर दिया है। रॉयटर्स के मुताबिक वैगनर ने वोरोनेज और रोस्तोव शहर पर कब्जा कर लिया है। रोस्तोव का मिलिट्री हेडक्वार्टर भी वैगनर के कब्जे में है। रूसी मीडिया फ्छ की तरफ से जारी तस्वीरों में रोस्तोव शहर की सड़कों पर वैगनर की बख्तरबंद गाड़ियां दिखाई दे रही हैं। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, रूस के लिपेत्स्क प्रांत के गवर्नर ने कहा है कि वैगनर ग्रुप उनके इलाके में भी घुस गया है। वैगनर चीफ येवगेनी प्रिगोजिन ने रूसी सेना का एक हेलिकॉप्टर गिराने की बात भी कही है। अल-जजीरा ने खबर दी है कि प्राइवेट आर्मी के मॉस्को की तरफ बढ़ने की खबर है। मॉस्को की सड़कों पर बख्तरबंद गाड़ियां और रूस की सेना तैनात कर दी गई है। शहर में हाई अलर्ट है और राजधानी को जोड़ने वाला हाईवे बंद कर दिया गया है। वैगनर की बगावत की खबर आने के बाद रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन ने देश को संबोधित किया। उन्होंने कहा- वैगनर ने पीठ में छुरा घोंपा है। उन्होंने देश की जनता को धोखा दिया है। यह सेना को चुनौती है। हम हर हाल में नागरिकों की रक्षा करेंगे। पुतिन ने कहा- महत्वाकांक्षा और निजी हितों के चलते हमारे साथ ये विश्वासघात हुआ है। जो कोई भी विद्रोह करेगा उसे दंडित किया जाएगा। उन्हें कानून और हमारे लोगों को जवाब देना होगा। जिसने भी जानबूझकर देशद्रोह का रास्ता अपनाया, उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। हम सभी खतरों के खिलाफ अपने लोगों और देश की सुरक्षा करेंगे।

रोस्तोव में रूसी मिलिट्री हेडक्वार्टर के बाहर की तस्वीर ● एजेंसी

प्रिगोजिन के खिलाफ देशद्रोह का मामला दर्ज

राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन के आदेश के बाद रूसी जांच एजेंसी एफएसबी ने वैगनर चीफ प्रिगोजिन के खिलाफ देशद्रोह का मामला दर्ज कर लिया है। उन पर सशस्त्र विद्रोह भड़काने का आरोप लगाया गया है। लड़ाकों से उनका कोई आदेश न मानने और उन्हें हिरासत में लेने को कहा गया है।

बाखमुत में वैगनर ट्रेनिंग कैंप पर अटैक से शुरू हुआ तनाव

रूस ने शनिवार को वैगनर हेड प्रिगोजिन पर तख्तापलट की कोशिश का आरोप लगाया। रॉयटर्स के मुताबिक, रूस और वैगनर के बीच तल्खी यूक्रेन के बाखमुत में प्राइवेट आर्मी के ट्रेनिंग कैंप पर मिसाइल अटैक के बाद शुरू हुई। इस हमलें में कई वैगनर लड़ाके मारे गए थे। प्रिगोजिन ने क्रेमलिन को इसका दोषी बताया था। रॉयटर्स के मुताबिक दो हफ्ते पहले ही रूस के रक्षा मंत्रालय ने एक आदेश जारी किया था। इसके तहत यूक्रेन के खिलाफ लड़ रहे सभी प्राइवेट लड़ाकों को रूस की सेना में शामिल होने के आदेश दिए गए थे।

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सीए नीरज मित्तल को भेजा गया जेल

RANCHI : मनी लॉन्ड्रिंग में जेल में बंद ग्रामीण कार्य विभाग के निलंबित मुख्य अभियंता वीरेंद्र राम के सीए नीरज मित्तल को जेल भेज दिया गया है। नीरज मित्तल को ईडी ने दिल्ली से गिरफ्तार किया था। शनिवार को रांची स्थित पीएमएलए कोर्ट में पेश किया। जिसके बाद कोर्ट ने उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया। सीए नीरज मित्तल पर बीरेंद्र राम के पैसों के निवेश में सहायता करने का आरोप है। ईडी ने शिकायत में बताया है कि चार्टर्ड अकाउंटेंट मुकेश मित्तल ने बड़े पैमाने पर मनी लॉन्ड्रिंग की है। केनरा बैंक की नई दिल्ली स्थित एनएसई शाखा में वीरेंद्र राम व उनकी पत्नी राजकुमारी देवी के नाम से संयुक्त खाता है, जहां बड़ी रकम मिली है। इस खाते में वित्तीय वर्ष 2014-15 से वित्तीय वर्ष 2018-19 के बीच 9.30 करोड़ रुपये जमा किए गए थे। इसके अलावा वीरेंद्र राम के पिता गेंदा राम के नई दिल्ली स्थित केनरा बैंक के एसएमई नारायण विहार शाखा में 22 दिसंबर 2022 से 23 जनवरी 2023 के बीच महज 31-32 दिल्ली में 4.48 करोड़ रुपये जमा किए गए हैं। दोनों ही खातों में चार्टर्ड अकाउंटेंट मुकेश मित्तल ने अपने फर्जी तरीके से खोले गए बैंक खातों की मदद से विभिन्न तिथियों में राशि जमा की थी।

अलकायदा संदिग्ध सामी भेजा गया घाघीडीह जेल

कड़ी सुरक्षा में लाया गया तिहाड़ से

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : अलकायदा के संदिग्ध सदस्य धातकीडीह निवासी मो. सामी को भारी सुरक्षा के बीच शनिवार को दिल्ली के तिहाड़ जेल से जमशेदपुर लाया गया। आरोपी को जिला व्यवहार न्यायालय जमशेदपुर में अपर जिला व सत्र न्यायाधीश एक संजय उपाध्याय की कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट में पेश कराने के बाद मो. सामी को धाधीडीह केंद्रीय कारा भेज दिया गया। बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता दिलीप महतो ने कोर्ट में पैरवी की। जानकारी के अनुसार तिहाड़ जेल की पुलिस ट्रेन से मो. सामी को लेकर शनिवार की सुबह टाटानगर स्टेशन पहुंची। इसके बाद उसे घाघीडीह जेल ले जाया गया। घाघीडीह जेल के कैदी वाहन में कड़ी सुरक्षा में मो. सामी को कोर्ट पहुंचाया गया। दूसरी ओर, इस केस के एक अन्य आरोपी ओडिशा के कटक निवासी अब्दुल रहमान कटकी को भी कोर्ट ने सशरीर पेश करने का निर्देश जारी किया है। मो. कटकी वर्तमान में तिहाड़ जेल में बंद है। दोनों का केस अलग-अलग चल रहा है।

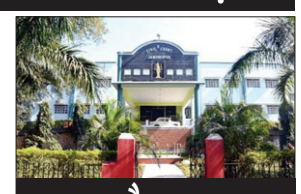

क्या है मामला

18 जनवरी 2016 को दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने धातकीडीह निवासी मो. सामी को हरियाणा के मेवात से गिरफ्तार किया था। मो. सामी पर आतंकी संगठन अलकायदा का सदस्य होने का आरोप है। इसके अलावा पाकिस्तान में आतंकी ट्रेनिंग करने का भी आरोप है। ओडिशा से अब्दुल रहमान कटकी की गिरफ्तारी के बाद दिल्ली पुलिस को मो. सामी के बारे में पता चला था। मो. सामी से पूछताछ के आधार पर जिला पुलिस ने आजादनगर निवासी नसीम अख्तर और धातकीडीह निवासी मो. मसूद उर्फ मोनू के घर में छापामारी की। इसमें पिस्तौल समेत कई कागजात बरामद किये थे। इसके बाद बिष्टुपुर के तत्कालिन थाना प्रभारी जितेन्द्र कुमार के बयान पर 25 जनवरी 2016 को बिष्टुपुर थाना में नसीम अख्तर उर्फ राजू, मो. मसूद उर्फ मोनू, मो. सामी, अब्दुल रहमान कटकी, मौलाना कलीमुद्दीन समेत अन्य के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गयी थी। मामले की जांच फिलहाल झारखंड एटीएस कर रही है।

स्मार्ट मीटर आंवटन में घपले की गूंज

मामला पहुंचा HIGHCOURT, टेंडर शर्तों की अवहेलना का आरोप

SPECIAL REPORTER RANCHI : राज्यभर में स्मार्ट मीटर लगाया जा रहा है। धनबाद में इसके लिये सर्वे जारी है। स्मार्ट मीटर लगाने के साथ ही राजधानी में स्मार्ट मीटर घोटाले की खबरें आने लगी। पहले स्मार्ट मीटर के लिये तार को लेकर एजेंसियों की मनमानी की खबरें आयीं। वहीं, अब झारखंड बिजली वितरण निगम पर टेंडर घोटाला का आरोप लगा है। मामले में हाईकोर्ट में याचिका दायर की गयी है। इस संबध में विधायक सरयू राय ने ट्वीट भी किया है। जिसमें बताया गया है कि

बिजली वितरण निगम ने टेंडर शर्तों की अवहेलना करते हुए टेंडर आवंटित किया है। जिस कंपनी की ओर से मामले में हाईकोर्ट में याचिका दायर की गयी है, उसने निगम पर आरोप लगाया है कि मीटर आपूर्ति की निविदा दर 98 करोड़ रुपए रखी गयी। इसके बाद भी निगम ने 140 करोड़ रुपए वाली कंपनी को आपूर्ति आदेश दे दिया। विधायक सरयू राय ने ट्वीट करते हुए लिखा है कि याचिकाकर्ता पर निगम की ओर से दबाव बनाया जा रहा है। जहां केस वापस लेने की बात की जा रही है। सरयू राय ने इस मामले में मुख्यमंत्री से जांच करने की मांग की है। राजधानी रांची में इस साल जनवरी से स्मार्ट मीटर लगाये जा रहे है। अब तक राजधानी में लगभग 90 हजार घरों में स्मार्ट मीटर लगाया गया है। जबकि एक हजार स्मार्ट मीटर प्रीपेड मोड पर कार्यरत है।

भागलपुर में बम धमाका नाबालिग की मौत

BHAGALPUR : बिहार का भागलपुर शनिवार को एक बार फिर से बम धमाके से दहल गया। इस हादसे में एक 17 साल के नाबालिग की मौत घटना स्थल पर ही हो गयी है। इसके साथ ही, अन्य तीन लोग इसमें घायल भी हुए हैं। बताया जा रहा है कि ये धमाका बबरगंज थाना क्षेत्र के हुसैनाबाद कुरैशी मुहल्ले में हुई है। जिस व्यक्ति के घर में धमाका हुआ है, उसका नाम अब्दुल गनी है। जबकि, मृतक की पहचान तौसीफ आलम के रुप में हुई है।

पारा शिक्षकों की परीक्षा 30 जुलाई को

अब 250 की जगह 150 अंक का होगा QUESTION PAPER

PHOTON NEWS RANCHI : लगभग एक साल के बाद पारा शिक्षकों के मानदेय की बढ़ोत्तरी के लिए आकलन परीक्षा ली जाएगी। झारखंड एकेडमिक काउंसिल ने परीक्षा का कार्यक्रम जारी कर दिया है। परीक्षा कार्यक्रम जारी करने के साथ परीक्षा के पैटर्न में भी बदलाव किया है। यह अहम बदलाव है। राज्य में पारा शिक्षकों के लिए पहली बार परीक्षा ली जा रही है। इस परीक्षा में शामिल होने के लिए 43 हजार शिक्षकों ने आवेदन जमा किया है। पारा शिक्षक आकलन परीक्षा पहले 250 अंक की निर्धारित थी। जारी नोटिफिकेशन के अनुसार यह परीक्षा अब 150 अंक की ली जाएगी। यह परीक्षा शिक्षक पात्रता परीक्षा की तरह की दो भाग में होगी। परीक्षा क्लास एक से पांच और छह से आठ के लिए होगी।

जेटेट पास नहीं करने वाले शिक्षक होंगे शामिल

झारखंड एकेडमिक काउंसिल की ओर से यह परीक्षा 30 जुलाई को ली जाएगी। पहली बार ली जाने वाली इस आकलन परीक्षा में वैसे प्रशिक्षित पारा शिक्षक शामिल होंगे, जो झारखंड शिक्षक पात्रता परीक्षा सफल नहीं हैं। हालांकि झारखंड शिक्षक पात्रता परीक्षा अब तक दो बार ही ली गयी है। अइस आकलन परीक्षा में सफल शिक्षकों के मानदेय में बढ़ोत्तरी की जाएगी। मानदेय में होने वाली बढ़ोत्तरी 10 फीसदी होगी। इस परीक्षा के लिए प्रवेश पत्र 20 जुलाई से शिक्षक डाउनलोड कर सकेंगे। एडमिट कार्ड वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकेगा।

तीर्थ पुरोहित बोले- मंदिर के गर्भगृह की दीवारों पर गोल्ड की जगह कर दिया CHEMICAL POLISH

केदारनाथ मंदिर से सोना चोरी का मामला गरमाया

AGENCY DEHRADUN : केदारनाथ धाम के तीर्थ पुरोहित और चारधाम महापंचायत के उपाध्यक्ष संतोष त्रिवेदी ने मंदिर को दान में मिला 23.78 किलो सोना चोरी होने का आरोप लगाया है। यह सोना मंदिर के गर्भगृह की दीवारों पर परत के रूप में लगाया गया था, जिसे मुंबई के एक व्यापारी ने दान किया था। एजेंसी के मुताबिक, त्रिवेदी का आरोप है कि मंदिर के गर्भगृह में पिछले साल सितंबर-अक्टूबर में सोने की परत चढ़ाने का काम हुआ था। जब सोने की प्लेटें लगाई गईं थीं, तो अब उन्हें पॉलिश करने की क्या जरूरत थी। लिहाजा इसकी जांच जरूरी है। वहीं, कांग्रेस नेता और उत्तराखंड के पूर्व मंत्री नवप्रभात का कहना है कि एक दानदाता के सोना दान करने पर संदेह किया जा रहा है। दान में कितना सोना मिला? तांबे में सोना क्यों मिलाया गया? ऐसे कई सवाल हैं। केदारनाथ ही नहीं बद्रीनाथ में भी ऐसा घोटाला होने की जानकारी मिल रही है। बढ़ते विवाद के बीच अब उत्तराखंड सरकार ने संस्कृति एवं धार्मिक मामलों के सचिव हरिचंद्र सेमवाल और गढ़वाल कमिश्नर की अध्यक्षता में एक जांच कमेटी बनाई है। राज्य के पर्यटन, धर्मस्व एवं संस्कृति मंत्री सतपाल महाराज ने शुक्रवार को कहा- कमेटी में विशेषज्ञों के साथ स्वर्णकार भी होंगे।

केदारनाथ मंदिर

मंत्री सतपाल बोले- जबरन तूल दे रहा विपक्ष

सतपाल ने विवाद बढ़ने पर कहा कि सोना चढ़ाने का काम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के विशेषज्ञों की देखरेख में किया गया था। एक दानदाता ने सोना खरीदा और इसे गर्भगृह की दीवारों पर जड़वाया। इसमें मंदिर समिति की कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं थी। काम पूरा होने के बाद इसका बिल और अन्य कागजात दानदाता ने मंदिर समिति के पास जमा कर दिए। विपक्षी दल मामले को जबरन तूल देकर चारधाम यात्रा में खलल डालने की कोशिश कर रहे हैं। इससे पहले, बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति ने आरोप झूठे बताए थे। कमेटी ने कहा था कि गर्भगृह में 23.78 किलोग्राम सोने का इस्तेमाल किया गया है। सोने की परत चढ़ाने के काम में तांबे की प्लेटों का इस्तेमाल बेस के रूप में किया गया है।

लूटे गए 1,095 हथियारों को सुरक्षाबलों ने किया बरामद

IMPHAL : हिंसा प्रभावित मणिपुर में सुरक्षा बलों की तलाशी अभियान के दौरान अबतक 1,095 हथियार, 13,702 गोला-बारूद और विभिन्न प्रकार के 250 बम बरामद किए गए हैं। मणिपुर पुलिस के केंद्रीय नियंत्रण कक्ष ने यह जानकारी दी। यह हथियार और गोला-बारूद 03 मई की हिंसा के बाद विभिन्न थानों से उपद्रवियों ने लूट लिये थे। एक रिपोर्ट के मुताबिक मणिपुर के विभिन्न पुलिस थानों से उपद्रवियों ने 4,000 से अधिक हथियार लूट लिये थे। पुलिस के अनुसार कुछ स्थानों को छोड़कर अधिकतर जिलों में स्थिति सामान्य है, जहां छिटपुट घटनाओं की खबरें हैं।

MANIPUR : हिंसा पर शाह ने की सर्वदलीय बैठक

दिल्ली में सर्वदलीय बैठक करते गृह मंत्री अमित शाह व अन्य ● एजेंसी

AGENCY NEW DELHI : मणिपुर में हुई हिंसा को लेकर शनिवार को दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में सर्वदलीय बैठक हुई। इस बैठक में भाजपा, कांग्रेस सहित 22 दलों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। बैठक लगभग तीन घंटे तक चली। बैठक में कांग्रेस की ओर से मणिपुर के पूर्व मुख्यमंत्री ओकराम इबोबी शामिल हुए, भाजपा की ओर से पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा शामिल हुए। आरजेडी की ओर से सांसद मनोज झा, शिवसेना से प्रियंका चतुर्वेदी, मेघालय के मुख्यमंत्री और एनपीपी नेता कोनराड के. संगमा, एसकेएम से सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग, तृणमूल कांग्रेस से डेरेक ओ ब्रायन सहित अन्य दलों के नेता शामिल हुए।

मराठवाड़ा और विदर्भ के वोटरों पर टिकी केसीआर की नजर, CONGRESS-NCP में मची खलबली

पटना में भाजपा के खिलाफ 15 विपक्षी दलों की बैठक में बीआरएस प्रमुख केसीआर नहीं हुए थे शामिल

AGENCY, MUMBAI

भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के अध्यक्ष और तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव यानी केसीआर महाराष्ट्र में विपक्षी एकता को चुनौती देने की तैयारी में जुट गए हैं। उनकी नजर महाराष्ट्र के मराठवाड़ा और विदर्भ के वोटरों पर टिकी हुई है। बीएसआर के सुप्रीमो विपक्षी एकता को चुनौती देने के लिए अपनी पार्टी का विस्तार करने के लिए महाराष्ट्र के मराठवाड़ा और विदर्भ इलाके में रैलियां आयोजित की हैं। अब खबर है कि 26 जून को मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव अपने मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों के साथ सोलापुर जिले के पंढरपुर मंदिर में पूजा-अर्चना के लिए जाएंगे।

बता दें कि शुक्रवार को बिहार की राजधानी पटना में भाजपा के खिलाफ 15 विपक्षी दलों की बैठक में बीआरएस प्रमुख केसीआर शामिल नहीं हुए थे। इस बैठक में केसीआर के अलावा वाईएसआर कांग्रेस, जेडीएस, बीएसपी और बीजेडी के सुप्रीमो जगनमोहन रेड्डी, एचडी देवगौड़ा, मायावती और नवीन पटनायक भी शामिल नहीं हुए थे। हालांकि, भाजपा के खिलाफ विपक्षी एकता को मजबूत करने के लिए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बीआरएस प्रमुख के चंद्रशेखर राव से मुलाकात की थी।

अंग्रेजी के अखबार 'द इंडियन एक्सप्रेस' की एक रिपोर्ट के अनुसार, तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के नेतृत्व वाली बीआरएस 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले पड़ोसी राज्य महाराष्ट्र में पैठ बनाने के लिए अपनी कोशिशें तेज कर रही है। बीआरएस ने हाल के महीनों में महाराष्ट्र के मराठवाड़ा और विदर्भ क्षेत्रों में रैलियां आयोजित की हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि तेलंगाना के मुख्यमंत्री केसीआर अपने पूरे मंत्रिपरिषद के साथ 26 जून को महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के पंढरपुर मंदिर में दर्शन करने जाएंगे। वे सभी आषाढ़ी एकादशी से दो दिन पहले 27 जून को पंढरपुर में प्रसिद्ध श्री विठ्ठल

रुक्मिणी मंदिर का दौरा करेंगे।

बीआरएस के महाराष्ट्र किसान प्रकोष्ठ के प्रमुख माणिक कदम ने कहा कि केसीआर ने पिछले दिनों पंढरपुर मंदिर का दौरा किया था। इस बार उनके नेतृत्व में पूरी तेलंगाना कैबिनेट पंढरपुर में होगी। बीआरएस ने सोलापुर में केसीआर कैबिनेट की उपस्थिति के दौरान पंढरपुर में एक हेलीकॉप्टर से वारकरियों पर गुलाब की पंखुड़ियां बरसाने की भी योजना बनाई है। वारकरी भगवान विठ्ठल के भक्त हैं, जो जून-जुलाई में बड़ी संख्या में पैदल मंदिर शहर की वार्षिक तीर्थयात्रा करते हैं।

बीआरएस महाराष्ट्र में अपने प्रवेश के लिए पार्टी कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ाने और किसानों तक पहुंच बनाने सहित कई अन्य उपाय भी कर रही है, जिससे राज्य दलों के एक वर्ग विशेषकर विपक्ष में खलबली मची हुई है। वरिष्ठ एनसीपी नेता और महाराष्ट्र विधानसभा में विपक्ष के नेता (एलओपी) अजीत पवार ने कहा कि हम बीआरएस को हल्के में नहीं ले सकते। बीआरएस महाराष्ट्र में सक्रिय है। वह राज्य में खुद को मजबूत करने के लिए तेजी से अपना नेटवर्क फैला रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि केसीआर की महाराष्ट्र रणनीति किसान सरकार की आवश्यकता पर प्रकाश डालने पर केंद्रित है, जो किसानों के हित के लिए समर्पित होगी। हाल ही में केसीआर ने नागपुर में बीआरएस कार्यालय खोला, जहां उन्होंने एक सार्वजनिक रैली भी की। इस कार्यक्रम में बीआरएस कार्यकर्ताओं ने पूरे शहर में पार्टी के बैनर और पोस्टर लगाकर महाराष्ट्र की दूसरी राजधानी को गुलाबी बना दिया। आरएसएस का मुख्यालय नागपुर में स्थित है, जो डिप्टी सीएम देवेंद्र फड़नवीस और केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी का गृह नगर भी है। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस ने कहा कि जो कोई भी भगवान विट्ठल की पूजा करने के लिए पंढरपुर मंदिर आना चाहता है, उसका स्वागत है। पंढरपुर मंदिर के दरवाजे जाति, समुदाय, राजनीतिक विचारधारा या राज्य से परे सभी के लिए खुले हैं। उन्होंने कहा कि अगर केसीआर अपने कैबिनेट मंत्रियों के साथ दर्शन के लिए पंढरपुर में तीर्थयात्री के रूप में आ रहे हैं, तो हम उनका स्वागत करते हैं। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि हमारी एकमात्र चिंता यह है कि जब आपने पंढरपुर की तीर्थयात्रा की है, तो कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए। जो कोई भी यहां आता है, वह भक्त है। केसीआर की पंढरपुर मंदिर यात्रा का स्वागत करते हुए महाराष्ट्र के नेता राज्य में बीआरएस की योजनाओं पर सवाल उठा रहे हैं। इसे लेकर कांग्रेस की परेशानी भी बढ़ गई है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व सीएम अशोक चव्हाण ने कहा कि बीआरएस ने राज्य में रैलियां की हैं। वे अपने वैचारिक झुकाव को स्पष्ट रूप से नहीं बता रहे हैं। यदि वे केंद्र और राज्य में सरकार के खिलाफ हैं, तो वे विपक्षी दलों के साथ क्यों नहीं जुड़ रहे हैं। ये ऐसे सवाल हैं, जो हमारे दिमाग में पैदा हो रहे हैं। बता दें कि इस साल के फरवरी और अप्रैल महीने में बीआरएस ने नांदेड़ में रैलियां आयोजित कीं, जो चव्हाण का गृह क्षेत्र है।

सदान विकास पार्टी ने तीन सूत्री मांगों को लेकर दिया धरना

राजभवन के समक्ष किया गया प्रदर्शन

- ओबीसी आरक्षण में आने वाले सभी कनीय अभियंताओं को सहायक अभियंता के पद पर प्रोन्नति मिले

RANCHI: झारखंड राज्य बने 23 साल हो गये। इतने दिनों में राज्य की सभी पार्टियों के विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री और सांसदों ने सदानों को हक और अधिकार से वंचित करने की साजिश की है। ओबीसी आरक्षण लागू किये बिना ही पंचायत चुनाव करा दिया गया। उक्त बातें सदान विकास पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजेंद्र प्रसाद साहू ने तीन सूत्री मांगों को लेकर राजभवन के समक्ष धरने के दौरान कही। राज्य में 77 फीसदी सदान निवास करते हैं। सदान बहुल राज्य है, जहां 56% राज्य में ओबीसी है फिर भी सरकार उनके अधिकार का हनन कर रही है।

डॉ राजेंद्र प्रसाद साहू ने कहा कि यदि सरकार और राज्यपाल हमारी मांगों पर विचार नहीं करते हैं तो प्रधान विकास पार्टी 10 दिनों के बाद राज्य में उग्र आंदोलन करेगी। राजभवन के समक्ष धरने के दौरान पार्टी के गुमला जिला अध्यक्ष सुनील कुमार भगत, रामगढ़ जिला अध्यक्ष रामेश्वर महतो, सुनील कुमार भगत, सुदेश कुमार साहू, मोहम्मद जुबेर, मोहम्मद परवेज, प्रशांत कुमार ने सभा को संबोधित किया।

किसानों की समस्याओं पर मंत्री आलमगीर से मिले पूर्व सांसद और छतरपुर की विधायक

PHOTON NEWS PALAMU:

पूर्व सांसद व भाजपा नेता मनोज कुमार व छतरपुर की विधायक पुष्पा देवी ने शनिवार को ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम से मुलाकात की। इस दौरान क्षेत्र की विभिन्न योजनाओं के साथ मूलभूत समस्याओं पर भी चर्चा हुई। कृषि साख की समस्या के निदान के लिए पूर्व सांसद ने मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों से भी बात की। मनोज कुमार ने कहा कि ग्रामीण विकास के संदर्भ में कृषि साख की समस्या भी एक महत्वपूर्ण समस्या बनी हुई है। कृषि साख से अभिप्राय कृषि

उत्पादन के लिए आवश्यक भौतिक सुविधाओं को खरीदने की क्षमता से है। कृषि साख के दो स्रोत हैं। संस्थागत स्रोत जैसे बैंक और गैर-संस्था का स्रोत जैसे जमीदार या साहूकार। संस्थागत शाखों की उपलब्धता के बावजूद आज भी छोटे व सीमांत किसान पैसे उधार लेने के लिए साहूकारों के पास जाते हैं। यह स्रोत सदैव शोषणकारी सिद्ध होते हैं। खाते में हेरफेर करना इनकी आम बात होती है और जिसकी दर अधिकतर ऊंची ही होती है, जिसके कारण छोटे किसान अपना ऋण नहीं चुका पाते।

स्वयं सहायता समूह से बदल रही महिलाओं की जिंदगी

गोड्डा जिले में आयोजित लोक संवाद कार्यक्रम में बोले राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन

PHOTON NEWS RANCHI:

राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने आज शनिवार को गोड्डा जिले के सुन्दरपहाड़ी स्थित फुटबॉल मैदान में 'लोक संवाद कार्यक्रम' में भाग लेते हुए कहा कि उन्हें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 50,000 से अधिक घरों का निर्माण किया जा चुका है। इस संदर्भ में संवाद के क्रम में जब एक महिला ने बताया कि कच्चा घर से पक्का मकान मिल जाने से बहुत खुशी हो रही है और अब मौसम की मार नहीं झेलनी पड़ती है। राज्यपाल ने

कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि प्रत्येक बेघर का अपना घर हो। सिर्फ घर ही नहीं, घर के साथ-साथ उन्हें पेयजल भी उपलब्ध हो। इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नल-जल योजना चलाई जा रही है। इस योजना के तहत प्रत्येक घर में पेयजल की आपूर्ति की जायेगी। इसके लिए लगातार कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि एक सम्मानजनक जिंदगी के लिए लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए। आवास एवं पेयजलापूर्ति के साथ-साथ निर्बाध बिजली, अच्छी सड़क, बेहतर स्वास्थ्य एवं शिक्षा के लिए सरकार लगातार कार्य कर रही है।

स्वयं सहायता समूह से सशक्त हो रहीं महिलाएं : लोक संवाद कार्यक्रम में स्वयं सहायता समूह की एक दीदी ने बताया कि समूह से जुड़ने के पहले उसके घर की माली हालत दयनीय थी। समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने ऋण लेकर बकरी पालन किया एवं किराना दुकान खोली। 15-20 हजार प्रतिमाह कमा रही है और अपने बच्चों को अच्छे विद्यालयों में पढ़ा रही है।

एक अन्य दीदी ने समूह से जुड़ने के बाद जीवन में आए बदलाव को बताया। राज्यपाल ने गोड्डा जिले में 1 लाख से अधिक महिलाओं के स्वयं सहायता समूह से जुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि स्वयं सहायता समूह से जुड़कर महिलाओं का सशक्तीकरण हो रहा है और उनके परिवार का जीवन स्तर भी बेहतर हो रहा है। सरकार की योजनाओं का लाभ लेकर सशक्त बनें एवं स्वावलंबी बनें।

भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष मीरा यादव हैं, न कि गीता लागुरी : दुर्गावती बोयपाई

PHOTON NEWS KIRIBURU:

भाजपा जिला महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष दुर्गावती बोयपाई ने गीता लागुरी को सारंडा महिला मोर्चा का नया अध्यक्ष बनाये जाने को अवैध करार दिया है। उन्होंने वर्तमान अध्यक्ष मीरा यादव को ही असली अध्यक्ष बताया। कहा कि उन्हें इसकी जानकारी व्हाट्सएप ग्रुप से हुई कि उनके निर्देश पर महिला मोर्चा की जिला महामंत्री पुतुल पूर्ति ने किरीबुरू जाकर मीरा यादव को हटाकर गीता लागुरी को सारंडा मंडल महिला मोर्चा का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया है। जबकी उन्होंने किसी मंडल अध्यक्ष को हटाने व किसी को नियुक्त करने संबंधित ऐसा कोई आदेश पुतुल पूर्ति अथवा किसी अन्य को नहीं दिया था। यह कैसे

किया गया, इसकी जांच की जाएगी। उन्होंने कहा की गीता लागुरी भाजपा महिला मोर्चा के साथ जुड़कर कार्य करना चाहती है तो उनका स्वागत है। वे उनसे बात करेंगी एवं जरूरत अनुसार सारंडा मंडल अथवा जिला कमेटी में उनको शामिल कर नयी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। लेकिन उनका सारंडा मंडल अध्यक्ष के रुप में चयन करना गलत है एवं यह अमान्य है। उन्होंने बताया की जिला कमेटी की बिना अनुशंसा के किया गया यह कार्य पुरी तरह गलत व संगठन विरोधी है। इससे आपसी गुटबाजी बढेगी। उन्होंने सभी को ऐसे कार्यों से बचने की हिदायत दी है, तथा कोई भी शिकायत होने पर जिला कमेटी को अवगत कराने की अपील की है।

विपक्षी एकता से भाजपा नेता बेचैन : राजद

PHOTON NEWS RANCHI:

राजद के महासचिव सह प्रवक्ता डॉ मनोज कुमार ने कहा कि बिहार में विपक्ष दलों के एकजुटता देख भाजपा नेता बेचैन हैं। विशेष रूप से झारखंड के भाजपा नेता काफी असहज और बेचैन हो रहे हैं। झारखंड से भाजपा के जनाधार खिसकते देख भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष काफी बेचैन है। कुमार ने शनिवार को भाजपा नेता दीपक प्रकाश के बयान की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि भाजपा के सभी नेता दूध के धुले हैं। सौ चूहे खा कर बिल्ली चली हज को के कहावत को भाजपा नेता चरितार्थ कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं को बोलने से पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए । भाजपा नेता जिस झारखंड की धरती से बोल रहे है यहां भाजपा की जब जब सत्ता रही झारखंड को लूट खंड बनाने का काम किया। झारखंड की जनता को ठगने और धोखा देने का काम किया। कुमार के कहा कि जीरो टॉलरेंस वाली रघुवर दास सरकार के समय 31 घोटाले हुए । इनमें मोमेंटम झारखंड में 100 करोड़, 400 करोड़ के लौह अयस्क, 18 करोड़ के कंबल घोटाले, 61 करोड़ के अल्पसंख्यक छात्रवृति घोटाले, टॉफी टी शर्ट घोटाले सहित अनेक घोटाले उजागर हुए। भाजपा नेताओं को यह भ्रष्टाचार नहीं दिखता। उन्होंने भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष से कहा कि बोलने से पहले अपने गिरेबान को देखिए। जनता है सब देख रही है।

राज्यपाल ने देवघर जिले के ठाढ़ियारा पंचायत भवन में किया लोक संवाद

PHOTON NEWS DEOGHAR:

राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने शनिवार को जिले के मोहनपुर प्रखण्ड अंतर्गत ठाढ़ियारा पंचायत भवन में लोक संवाद किया। उन्होंने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक जिला में लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) को बढ़ावा दिए जाने से लोगों को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे, उनका जीवन स्तर आगे बढ़ेगा। साथ ही कहा कि सरकार ने उज्ज्वला योजना के तहत फ्री कुकिंग गैस कनेक्शन दिया गया है। इस योजना से भारत का 95 फीसदी आबादी आच्छादित हो चुका है। नल-जल योजना के तहत पेयजलापूर्ति की जा रही है।

राज्यपाल ने कहा कि झारखंड प्रदेश में भी पारंपरिक खेती में रसायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं किया जाता है। इसलिए झारखंड भी शनै-शनै पूर्णरूप से ऑर्गेनिक खेती की ओर अग्रसर हो सकता है।

जनसंवाद के दौरान राज्यपाल ने बिरसा हरित ग्राम योजना, बिरसा संवर्धन सिंचाई कूप निर्माण योजना, सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना, सर्वजन पेंशन योजना के अलावा मुख्यमंत्री कन्यादान योजना से सुयोग्य लाभुकों को लाभान्वित किया। साथ ही सखी मंडल की दीदियों को 24 लाख रुपये का क्रेडिट लिंकेज प्रदान किया।

कांग्रेस ने सर्वदलीय बैठक से पहले भाजपा पर साधा निशाना

50 दिन से MANIPUR जल रहा है, लेकिन प्रधानमंत्री को फुर्सत ही नहीं कि वे समस्या के हल के लिए बातचीत करें

AGENCY NEW DELHI:

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने अपने ट्विटर वॉल पर लिखा कि वास्तव में इस बैठक की अध्यक्षता प्रधानमंत्री को करनी चाहिए थी, जो इतने समय तक चुप रहे। इसे राष्ट्रीय वेदना के प्रदर्शन के तौर पर इंफाल में आयोजित किया जाना चाहिए था। भाजपा ने मणिपुर के लोगों को बुरी तरह से निराश किया है।

मणिपुर में जारी हिंसा को लेकर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा पर हमला किया है। उन्होंने कहा है कि भाजपा के लोग तो बहुत दावे करते हैं कि हमारे राज्य में कहीं सांप्रदायिकता नहीं होती। यहां 50 दिन से मणिपुर जल रहा है लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फुर्सत ही

नहीं है कि वे समस्या के हल के लिए बातचीत करें। आपको बता दें कि मणिपुर में भीड़ ने राज्य सरकार में मंत्री एल सुसींद्रो के इंफाल पूर्वी जिले के चिनगारेल स्थित निजी गोदाम में आग लगा दी जिसकी जानकारी पुलिस ने दी है। उल्लेखनीय है कि हिंसा प्रभावित राज्य के हालात पर चर्चा के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा दिल्ली में शनिवार को सर्वदलीय बैठक बुलायी गयी है जिसमें मणिपुर के पूर्व मुख्यमंत्री ओकराम इबोबी सिंह कांग्रेस का प्रतिनिधित्व करेंगे। कांग्रेस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से हिंसा प्रभावित राज्य मणिपुर में शांति स्थापित करने में मदद के लिए प्रदेश में ही सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग कर रही है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा है कि मणिपुर 52 दिन से जल रहा है और आखिरकार गृह मंत्री ने आज मणिपुर पर सर्वदलीय बैठक बुलाना उचित समझा है। इधर मणिपुर की राजधानी इंफाल में बाजार खुले और लोग जरूरी सामान खरीदने के लिए बाहर निकले। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह आज दिल्ली में मणिपुर के हालात पर चर्चा के लिए सर्वदलीय बैठक करेंगे। इस बैठक में शामिल होने के लिए केंद्रीय मंत्री व नेता पहुंचे। मेघालय के मुख्यमंत्री कॉनराड के। संगमा और उढक(ट) सांसद जॉन ब्रिटास मणिपुर की मौजूदा स्थिति को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक के लिए पहुंचे। अनुराग ठाकुर के ड्रामेबाज वाले बयान पर छत्तीसगढ़ सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि सभी दलों का अपना अस्तित्व है और सभी अलग-अलग समय पर अलग निर्णय लेते हैं। ये अनुराग ठाकुर बताएं कि इन्हीं दलों से जब भाजपा का भी गठबंधन हुआ और सरकार बनाई तब वे क्या थे? सबसे बड़े ड्रामेबाज इखढ के लोग हैं। गौर हो कि विपक्ष की बैठक पर केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा था कि रंगमंच सज चुका है, नाटकमंडली एकत्रित हो चुकी है। कैसे उस मंच पर एकत्रित हो गए जहां ममता बनर्जी कांग्रेस को कहती है बंगाल छोड़ दो, अखिलेश कहते हैं यूपी छोड़ दो, लालू-नीतीश कहते हैं बिहार छोड़ दो। तो कांग्रेस क्या गठबंधन में कुर्सियां लगाने के लिए रह जाएगी?

हेमंत सरकार में नियुक्तियों का दौर जारी, युवाओं में जगी उम्मीद

PHOTON NEWS RANCHI:

झारखंड की हेमंत सरकार में इन दिनों नियुक्तियों का दौर जारी है। पिछले दो महीने में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बड़े पैमाने पर नियुक्ति पत्र सौंपे हैं। यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि सरकार ने चुनाव से पहले युवाओं को रोजगार देने का जो दावा किया था, सरकार उसे पूरा करने की कोशिश पूरी ईमानदारी से कर रही है। 2019 में सरकार गठन के कुछ ही महीनों बाद पूरी दुनिया कोरोना के चपेट में आ गयी थी। इस दौरान सरकार को काम करने का मौका नहीं मिल पाया।

दो साल बाद कोरोना के शिकंजे से निकलने पर सरकार ने नियुक्तियों का पिटारा खोला। युवाओं को खुले हाथों नौकरी देने की प्रक्रिया शुरू हो गयी। हेमंत सोरेन ने अब तक आठ हजार से ज्यादा नियुक्ति पत्र सौंपे हैं। निजी क्षेत्रों में भी साढ़े तेरह हजार

नौकरियां दिलवाई है। युवाओं में इन नियुक्तियों को लेकर खासा उत्साह है और उनमें आशा की एक किरण जगी है।

जल्द होगी 6 हजार शिक्षकों और पुलिस विभाग में बहाली : 22 जून को मुख्यमंत्री ने घोषणा की थी कि सरकार बहुत जल्द 6 हजार शिक्षकों और पुलिस विभाग में बहाली करेगी। और ये सिलसिला थमेगा नहीं। रोजगार देना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। तीन दिन पहले ही पंचायत सचिव का नियुक्ति पत्र पाने वाले गुलाम हुसैन कहते हैं कि हालांकि पंचायत सचिव के लिए काफी लंबा संघर्ष करना पड़ा, लेकिन अंत भला तो सब भला। इसके लिए हम सरकार के आभारी हैं ।उन्होंने उम्मीद जताई कि सरकार जल्द से जल्द अन्य विभागों में भी नियुक्ति की प्रक्रिया को पूरी करे और युवाओं को रोजगार दे।

BRIEF NEWS

झारखंड मानवाधिकार आयोग में अध्यक्ष और सदस्यों की होगी नियुक्ति

RANCHI : झारखंड के मानवाधिकार आयोग में एक अध्यक्ष और दो सदस्यों की नियुक्ति होगी। इसको लेकर गृह कारा आपदा प्रबंधन विभाग ने अधिसूचना जारी की है। जारी अधिसूचना में कहा गया है कि झारखंड मानवाधिकार आयोग में अध्यक्ष के एक रिक्त पद और सदस्य के दो रिक्त पदों पर नियुक्ति के लिए हाईकोर्ट के रिटायर चीफ जस्टिस, हाई कोर्ट के रिटायर या कार्यरत जज के अलावा कार्यरत रिटायर जिला जज (जिनके पास सात साल का जिला न्यायाधीश के रूप में प्राप्त योग्यता है), आवेदन कर सकते हैं। बता दें कि झारखंड के लोगों के मानवाधिकारों की रक्षा और न्याय दिलाने के लिए राज्य मानवाधिकार आयोग का गठन 17 जनवरी 2011 को किया गया था। अब तक आयोग में तीन अध्यक्ष हो चुके हैं।

नगर विकास विभाग के चार टाउन मैनेजर का हुआ तबादला

RANCHI : नगर विकास विभाग ने संविदा पर कार्यरत चार नगर प्रबंधकों का तबादला किया है। चिरकुंडा नगर परिषद में पदस्थापित विजय कुमार को रांची नगर निगम ,नगर प्रबंधक के पद पर पदस्थापित किया गया। राजमहल में पदस्थापित संतोष कुमार को स्थानांतरित करते हुए रांची नगर निगम में नगर प्रबंधक के पद पर पदस्थापित किया गया है। रांची नगर निगम से निशांत जोशी तिर्की को स्थानांतरित करते हुए नगर प्रबंधक सिमडेगा के पद स्थापित किए गए हैं। प्रमेय मंदिललवार नगर निगम गिरिडीह में पदस्थापित को स्थानांतरित करते हुए नगर प्रबंधक बंशीधर नगर निकाय में पदस्थापित किया गया है। इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी गई है।

झारखंड सीनियर तैराकी चैंपियनशिप में रांची बना ओवरऑल चैंपियन

RANCHI : झारखंड स्वीमिंग एसोसिएशन द्वारा टाटा स्टील की देख-रेख में 23 जून को 13वीं झारखंड राज्य सीनियर तैराकी चैंपियनशिप 2023 का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। इसमें 248 प्वाइंट पॉइंट लेकर रांची जिला की टीम ओवरऑल चैंपियन हुई। टाटा स्टील की टीम 181 प्वाइंट लेकर उपविजेता रही। साथ ही पुरुषों में टाटा स्टील की टीम विजेता और रांची की टीम उपविजेता रही। महिलाओं में रांची की टीम विजेता और टाटा स्टील की टीम उपविजेता हुई। गौरतलब है कि जेआरडी टाटा स्पोर्टस कॉम्पलेक्स बिष्टुपुर में शुक्रवार को सीनियर स्टेट स्विमिंग चैंपियनशिप का समापन हुआ था। चैंपियनशिप में राज्य के 125 तैराकों ने हिस्सा लिया था।

तत्कालीन सीओ मनोज कुमार पर चलेगी विभागीय कार्यवाही

RANCHI : राज्य सरकार ने तत्कालीन शहर अंचल सीओ रांची मनोज कुमार पर विभागीय कार्यवाही चलाने का आदेश दिया है। उनके उपर लगे आरोपों की जांच के लिए सेवानिवृत आईएएस अधिकारी अरविंद कुमार को जांच संचालन पदाधिकारी के पद पर नियुक्त किया गया है। बिना राजस्व पंजियों, अभिलेखों, परिपत्रों की जांच पड़ताल किए राजस्व कर्मचारी एवं अंचल निरीक्षक की अनुशंसा पर आदिवासी भूमि का हस्तांतरण गैर आदिवासी को करने का आरोप है। रांची उपायुक्त ने 21 मार्च 2020 को ही उनके उपर सीएनटी एक्ट के प्रावधानों का उल्लंघन का आरोप लगाकर राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग को कार्रवाई की अनुशंसा की थी।

atom美 ATOMY INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

दुमका अंकिता हत्याकांड मामले में झारखंड हाईकोर्ट में हुई सुनवाई : कोर्ट ने पूछा -

पीड़ित परिवार को क्या-क्या BENEFIT मिला, अगली सुनवाई में दें पूरी जानकारी

SPECIAL REPORTER RANCHI : झारखंड की उपराजधानी दुमका में 23 अगस्त 2022 को सनकी आशिक ने एकतरफा प्यार में अंकिता नाम की लड़की पर पेट्रोल छिड़क कर आग लगा दी थी। इस घटना की वजह से उक्त लड़की की जान चली गयी। इस मामले को झारखंड हाईकोर्ट ने 30 अगस्त 2022 को स्वतः संज्ञान लिया था। इसी कड़ी में इस मामले की आज चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में सुनवाई हुई। जहां सुनवाई के दौरान अदालत ने एमिकस क्यूरी रमित सत्येंद्र से पीड़ित परिवार को अब तक मिले लाभ के बारे जानकारी मांगी। इसके जवाब में एमिकस क्यूरी रमित सत्येंद्र ने अदालत को बताया कि परिवार को अब तक 10 लाख रुपये राज्य सरकार की ओर से दिए गए हैं। इस पर कोर्ट ने अगली सुनवाई के दौरान पूरी जानकारी देने को कहा है।

केंद्र सरकार नहीं दाखिल कर सकी स्टेटस रिपोर्ट

शनिवार को हुई सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की ओर से स्टेटस रिपोर्ट दिया जाना था, जो दाखिल नहीं किया जा सका। दरअसल इस मामले में सुनवाई के दौरान पिछली सुनवाई में कोर्ट ने केंद्र सरकार से पूछा था कि देवघर, एम्स में बर्न वार्ड कब तक बन कर तैयार हो जाएगा। केंद्र सरकार और एम्स, देवघर की ओर से पैरवी कर रहे अधिवक्ता प्रशांत पल्लव ने कोर्ट को बताया था कि स्थानीय सांसद ने भी अपने स्तर पर पीड़ित परिवार को आर्थिक मदद दी है। उनकी ओर से 28 लाख का फंड जमा किया गया है।

राज्य सरकार ने दिया था शपथ पत्र

स्वतः संज्ञान के इस मामले की पिछली सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से शपथ पत्र दिया गया था। राज्य सरकार ने शपथ पत्र दाखिल कर बताया था कि मामले में दो आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल हो चुका है। ट्रायल जारी है। राज्य सरकार की ओर से घटना के समय ही परविार को आर्थिक मदद दी थी। जांच की जा रही है।

क्या है मामला

एकतरफा प्यार में विफल रहने के बाद दुमका के शाहरूख हुसैन नामक युवक ने 12वीं की छात्रा पर 23 अगस्त, 2022 को पेट्रोल छिड़कर उसके ही घर में ही जला दिया गया था। बेहद गंभीर स्थिति में उसे दुमका के फूलो झानो मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जिसके बाद बेहतर इलाज के लिए उसे रिम्स, रांची रेफर कर दिया गया था। जहां 28 अगस्त 2022 को हो गई।

डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन प्रॉपर्टी प्रोटेक्शन कमेटी के सचिव की याचिका पर सुनवाई

कोर्ट ने याचिकाकर्ता की जुर्माना राशि को घटाया

RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने शनिवार को डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन प्रॉपर्टी प्रोटेक्शन कमेटी के सचिव राजेश ए नंदी की ओर से दायर जनहित याचिका की सुनवाई की। खंडपीठ ने तथ्य छिपाकर जनहित याचिका दाखिल करने पर याचिकाकर्ता राजेश ए नंदी पर लगाए गए एक लाख रुपये की जुमार्ना राशि में से 50 हजार रुपये माफ कर दिया है।

याचिकाकर्ता की ओर से कोर्ट से आग्रह किया गया था कि वह सेवानिवृत्त शिक्षक है। इसलिए जुमार्ना की राशि घटाई जाए। पिछली सुनवाई में कोर्ट ने याचिकाकर्ता को इस केस से हटा दिया था। साथ ही उस पर एक लाख रुपये का जुमार्ना भी लगाया था। जुमार्ने की राशि याचिकाकर्ता को एडवोकेट एसोसिएशन, झारखंड हाई कोर्ट में जमा करनी थी। याचिकाकर्ता की ओर से याचिका दाखिल कर कहा गया था कि डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ट्रस्ट की प्रॉपर्टी चैरिटेबल कार्यों हॉस्पिटल स्कूल के लिए यूज हो सकती है लेकिन छोटानागपुर डायोसी ट्रस्ट एसोसिएशन के द्वारा इसकी संपत्ति को हजारीबाग में अवैध रूप से बेचा जा रहा है, इसकी जांच कराई जाए। सुनवाई में कोर्ट को बताया गया था कि वर्ष 1930 में डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन एक कंपनी बन गई थी जिसका नाम डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ट्रस्ट एसोसिएशन था। वर्ष 1960 में इसकी ऐसेट एंड लायबिलिट छोटेनागपुर डायोसी ट्रस्ट एसोसिएशन मर्ज कर गया था। याचिकाकर्ता की ओर से एक सिविल सूट भी हजारीबाग सिविल कोर्ट में डाला गया था लेकिन इसकी जानकारी जनहित याचिका में याचिकाकर्ता की ओर से नहीं दी गई थी। इसके बाद कोर्ट ने याचिकाकर्ता पर नाराजगी जताते हुए उस पर एक लाख रुपये जुमार्ना लगाया था।

स्थापना दिवस पर टी शर्ट और टॉफी बांटने का मामला

सरकार से स्टेटस रिपोर्ट तलब

RANCHI : राज्य की तत्कालीन रघुवर सरकार के कार्यकाल में वर्ष 2016 में राज्य स्थापना दिवस पर टी शर्ट और टॉफी बांटने से संबंधित पंकज कुमार की जनहित याचिका की सुनवाई शनिवार को झारखंड हाइकोर्ट में हुई। मामले में कोर्ट ने राज्य सरकार को स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया है। मामले की अगली सुनवाई 11 अगस्त को होगी। हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले की सुनवाई की। बता दें कि वर्ष 2016 में स्थापना दिवस समारोह के पहले 13- 14 नवंबर को स्कूली बच्चों को बांटने के लिए साढ़े तीन करोड़ की टी शर्ट और 33 लाख रुपये की टॉफी खरीदी की गयी। उसके अगले दिन ही 15 नवंबर को राज्य भर के 10 हजार स्कूलों में बच्चों के बीच इसका वितरण कर दिया गया। प्रार्थी ने याचिका दाखिल कर इस पर सवाल उठाया है। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता राजीव कुमार ने पैरवी की। पूर्व की सुनवाई के दौरान मामले में प्रार्थी की ओर से कोर्ट को बताया गया था कि वर्ष 2016 में स्थापना दिवस समारोह के लिए 10 करोड़ रुपये स्वीकृत हुआ था, जिसमें से साढ़े तीन करोड़ की टी शर्ट और 33 लाख रुपये से टॉफी खरीदी गयी थी। लल्ला इंटरप्राइजेज जमशेदपुर और कुदू फैबरिक्स को आपूर्ति का काम मिला था। टी शर्ट और टॉफी की आपूर्ति उन्होंने 13-14 नवंबर को की। इसके अगले दिन ही इसे राज्य भर के 10 हजार स्कूलों के बच्चों में बांट देना सत्यता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। इसकी जांच करायी जानी चाहिए।

बार एसोसिएशन में हुई गड़बड़ी की जांच में तेजी लाने के निर्देश

RANCHI : जमशेदपुर जिला बार एसोसिएशन में हुई गड़बड़ी मामले में दाखिल जनहित याचिका की सुनवाई शनिवार को झारखंड हाईकोर्ट में हुई। हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ के समक्ष मामले के अनुसंधानकर्ता (आईओ) सशरीर उपस्थित हुए। उनकी ओर से कोर्ट को बताया गया कि मामले में जांच चल रही है, जिस पर कोर्ट ने कहा कि मामले की जांच में तेजी लाएं और रिपोर्ट कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत करें। कोर्ट ने अगली सुनवाई में भी अनुसंधानकर्ता को उपस्थित रहने का निर्देश दिया है। अनुसंधानकर्ता भूषण कुमार को अगली सुनवाई में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का कोर्ट ने निर्देश दिया है। मामले में कोर्ट ने मौखिक कहा कि अगर जांच सही तरीके से नहीं की गई तो कोर्ट इस पर कड़ा एक्शन भी ले सकता है। अगली सुनवाई 4 जुलाई को होगी। पिछली सुनवाई में कोर्ट ने मौखिक कहा था कि एफआईआर दर्ज होने के बाद अबतक कोई ठोस कार्रवाई क्यों नहीं हुई। साथ ही मामले के अनुसंधानकर्ता को कोर्ट में सशरीर उपस्थित रहने का निर्देश दिया था। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता राजीव कुमार ने पैरवी की।

विधायक समरी लाल के खिलाफ आदेश पारित नहीं करने का ऑर्डर बरकरार, 14 जुलाई को अगली सुनवाई

RANCHI : भाजपा के कांके विधायक समरी लाल के कास्ट सर्टिफिकेट को सही करार दिए जाने के झारखंड हाईकोर्ट के एकल पीठ के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर हाईकोर्ट की डबल बेंच में आंशिक सुनवाई हुई। शनिवार को सुनवाई के दौरान प्रार्थी सुरेश बैठा के वकील ने बहस के लिए समय देने का आग्रह किया, जिसे स्वीकार करते हुए अदालत ने 14 जुलाई को मामले की अगली सुनवाई की तिथि निर्धारित की है। इसके साथ ही अदालत ने कास्ट स्क्रूटनी कमिटी को झारखंड हाईकोर्ट के समक्ष मामला विचाराधीन होने तक कोई आदेश पारित नहीं किये जाने के आदेश को बरकरार रखा है। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा और जस्टिस रंगोन मुखोपाध्याय की खंडपीठ ने सुरेश बैठा की अपील पर सुनवाई की। दरअसल हाईकोर्ट की एकल पीठ ने 31 जनवरी को विधायक समरी लाल के जाति प्रमाण पत्र के मामले में स्क्रूटनी कमिटी के आदेश को रद्द करते हुए यह निर्देश दिया था कि इस मामले की सुनवाई के लिए एक अलग कमिटी बनाई जाये। जिसके खिलाफ सुरेश बैठा ने झारखंड हाईकोर्ट में एलपीए दाखिल की है। एलपीए के माध्यम से एकल पीठ के आदेश को चुनौती दी गई है। विधायक समरी लाल ने हाईकोर्ट की कास्ट स्क्रूटनी कमिटी के उस आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें उनके जाति प्रमाण पत्र को गलत करार दिया गया था। याचिका में कहा गया है कि बिना किसी ठोस आधार के समरी लाल के जाति प्रमाण पत्र को अवैध करार दिया गया है। विधायक समरी लाल की ओर से अधिवक्ता कुमार हर्ष और सूरज किशोर प्रसाद ने पक्ष रखा। वहीं सुरेश बैठा की ओर से अधिवक्ता इंद्रजीत सिन्हा और अखौरी अविनाश ने पक्ष रखा।

रांची में अपराध की योजना बनाते पुलिस ने दो अपराधियों को दबोचा

देशी कट्टा, दो गोलियां, 10 हजार नकद समेत कई सामान बरामद

प्रेस कांफ्रेंस कर जानकारी देते ग्रामीण एसपी नौशाद आलम ● फोटोन न्यूज

CRIME REPORTER RANCHI : कांके थाना पुलिस ने हथियार के साथ दो अपराधियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार बदमाशों में लोअर बाजार थाना निवासी राजन उर्फ सरफराज और जगरनाथपुर थाना निवासी मो अबरार शामिल है। इनके पास से एक देशी कट्टा, दो गोली, दो मोबाईल, एक स्कूटी, तीन फर्जी आधार कार्ड, 10 हजार नकद रुपये और एक स्मार्ट वाच बरामद किया गया है। यह जानकारी ग्रामीण एसपी नौशाद आलम ने शनिवार प्रेस कांफ्रेंस कर दी। एसपी ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि कांके थाना क्षेत्र के संग्रामपुर स्थित रिंग रोड के समीप दो बदमाश स्कूटी लेकर किसी घटना को अंजाम देने लिए हथियार लेकर घूम रहे है। सूचना के बाद कांके थाना प्रभारी अभास कुमार के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए राजन उर्फ सरफराज के पास से एक लोडेड देशी कट्टा,10 हजार नकद, एक मोबाईल और एक स्मार्ट वाच बरामद किया । जबकि मो अबरार के पास से जांच करने पर एक गोली, एक मोबाइल और तीन फर्जी आधार कार्ड बरामद किया गया।

ओएलएक्स से किताब खरीदने के नाम पर 9.64 लाख की ठगी

RANCHI : ओएलएक्स पर किताब खरीदने के नाम पर साइबर अपराधियों ने 9.64 लाख रुपए की ठगी कर ली। साइबर अपराधियों ने अरगोड़ा थाना क्षेत्र स्थित बायपास पूर्णिमा हाउस में रहने वाले सिविल कोर्ट के अधिवक्ता बिनय कुमार और उनके बेटे प्रतीक आनंद के खाते से कुल 9.64 लाख रूपया की निकासी कर ली। इसको लेकर सीआईडी के साइबर थाना में मामला दर्ज कराया गया है। दरअसल बीते 21 जून को अधिवक्ता के बेटे प्रतीक आनंद के दोस्त सुभांग मिश्रा ने ओएलएक्स ऐप पर अपनी पुराना किताब बेचने के लिए विज्ञापन डाला था। विज्ञापन देखकर ओएलएक्स की तरफ से सुभांग से चैट किया जाने लगा। इस दौरान ओएलएक्स की ओर से किताब खरीदने की बात कहते हुए पैसा भेजने के लिए अकाउंट नंबर व मोबाइल नंबर मांगा गया।

छिनतई गिरोह का खुलासा, चार अपराधी चढ़े पुलिस के हत्थे, लाखों का सामान बरामद

CRIME REPORTER RANCHI : रांची पुलिस ने राजधानी में आए दिन छिनतई की घटना का उद्भेदन करते हुए चार आरोपी को गिरफ्तार किया है। वही लालपुर, जगन्नाथपुर ओर बरियातू थाना क्षेत्र के 9 मामले का उद्भेदन किया है। वहीं आरोपी के पास से एक मोटरसाइकिल, चेन समेत अन्य ज्वेलरी बरामद की है। गिरफ्तार आरोपी में मो दानिश, मो. सद्दाम आलम उर्फ सद्दाब आलम, सचिन एक्का उर्फ आशु एक्का ओर अजय वर्मा का नाम शामिल है। अजय वर्मा द्वारा छिनतई किए गए जेबरात की खरीद बिक्री के आरोप में गिरफतार किया गया है। आरोपी के पास से एक मोटरसाईकिल (जेएच01सीसी-4639) चार मोबाईल, सोलह जोड़ा चांदी का पायल, छः पीस चांदी का ब्रेसलेट, पांच पीस चांदी का चेन, एक पीस कमर का बन्धनी चांदी का, एक पीस बाजू बन्धनी चांदी का, चार जोड़ा पंजा चांदी का, 15 पीस चांदी का लॉकेट 10, पच्चास जोड़ा चाँदी का बिछिया, सोने का एक पीस सिक्का नूमा, सोने का चेन एक पीस ओर नगद 28,000 रुपए बरामद किया गया है। बीते मंगलवार को लालपुर थाना क्षेत्र के मोराबादी मैदान स्थित बिजली ऑफिस के पास सुचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति सुशील कुमार अग्रवाल एवं उसकी पत्नी स्कुटी से जाते समय पीछे से एक काला रंग का पल्सर बाईक से तीन अज्ञात लोग अचानक आकर सुशील कुमार अग्रवाल की पत्नी के गले से सोने का चेन को झपट्टा मारकर छिन कर भाग गये। मामले को लेकर लालपुर थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई थी।

निगम सभागार में हुई वाटर सप्लाई स्कीम से संबंधित कार्यों की समन्वय बैठक

दो लाख में सिर्फ 48 हजार को मिला वाटर कनेक्शन

निगम सभागार में बैठक करते प्रशासक शशि रंजन ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : रांची नगर निगम में प्रशासक की अध्यक्षता में वाटर सप्लाई स्कीम से संबंधित कार्यों की समन्वय बैठक निगम सभागार में हुई। बैठक में जुडको ने बतलाया कि रांची शहरी जलापूर्ति योजना अंतर्गत नगर निगम क्षेत्र में लगभग 2 लाख 10 हजार जल संयोजन दिया जाना है, जिसके आलोक में अबतक 48 हजार 865 निशुल्क जल संयोजन किया जा चुका है। इसके बाद 28 हजार उपभोक्ताओं का आनलाईन एंट्री के लिए मेसर्स श्री पब्लिकेशन एवं स्टेशनर्स को दिया गया है। प्रशासक ने निर्देश दिया गया कि शेष 20 हजार अभिलेख शीघ्र ही मेसर्स श्री पब्लिकेशन एवं स्टेशनर्स को आलाईन एंट्री के लिए उपलब्ध कराया जाय तथा किये गये जल संयोजन में जिस क्षेत्र में पानी चालू नहीं हुआ है, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल के साथ समन्वय स्थापित करते हुए शीघ्र जलापूर्ति बहाल की जाय। प्रशासक ने इस परियोजना में कार्यरत सभी फर्मो को स्पष्ट रूप से कहा कि पाइप बिछाने के पश्चात सड़कों का मरम्मतीकरण ठीक प्रकार से नहीं किया जा रहा जिससे नागरिकों को काफी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने मरम्मतीकरण ठीक प्रकार से करने का निर्देश दिया तथा यह भी कहा कि भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति होगी तो फर्मो पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। जुडको, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल एवं गेल को यह निर्देश दिया गया कि पाईप लाईन विस्तारीकरण में जो भी रोड अथवा नाली क्षतिग्रस्त हुआ है, उसे बरसात के पूर्व मरम्मत कर दिया जाये अन्यथा किसी प्रकार की दुर्घटना होने पर इसकी पूरी जवाबदेही संबंधित एजेंसी की होगी। इसके साथ ही मेसर्स श्री पब्लिकेशन एंड स्टेशनर्स को निर्देश दिया गया कि प्रत्येक घरों से वाटर यूजर बिल की राशि का संग्रहण सत प्रतिशत करना सुनिश्चित करे। जलापूर्ति शाखा द्वारा संचालित धावादल को यह निर्देश दिया गया कि व्यवसायिक अवैध वाटर कनेक्शन को चिन्हित करते हुए कनेक्शन काटा जाय तथा जुमार्ना लगाया जाए।

प्रशिक्षु पुलिसकर्मियों को मिलेगा पांच दिनों का अवकाश

RANCHI : ट्रेनिंग पूरी कर लौटे प्रशिक्षु पुलिसकर्मियों को पांच दिनों का अवकाश मिलेगा। इस संबंध में आईजी ट्रेनिंग प्रिया दूबे ने आदेश जारी किया है। जारी आदेश में कहा गया है कि झारखंड पुलिस मेंस एसोसिएशन ने बीते 19 जून को राज्य में पीटीसी और एसपीसी प्रशिक्षण पूरी किये प्रशिक्षु पुलिसकर्मियों को पांच दिनों का अनुमति अवकाश स्वीकृत करने का अनुरोध पुलिस मुख्यालय से किया है। इसको लेकर जेएपीटीसी पदमा, सीटीटी मुसाबनी, जंगल वारफेयर स्कूल, नेतरहाट विस्थापित भवन धुर्वा, जैप-02, जैप-03, जैप-05, जैप जैप-07, जैप-08, जैप-10 में पीटीसी और एसपीसी प्रशिक्षण पूर्ण किये सभी प्रशिक्षु को उनके पैतृक जिला ईकाई में वापस होने के बाद पांच दिनों का अनुमति अवकाश स्वीकृत किया जाता है।

वंदे भारत एक्सप्रेस में पहले दिन सफर का लुत्फ उठाएंगे विद्यार्थी और शिक्षक

27 जून प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे उद्घाटन

PHOTON NEWS RANCHI : पटना-रांची के बीच चलने वाली वंदेभारत एक्सप्रेस ट्रेन का उद्घाटन 27 जून को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पूर्वाह्न 10:30 करेंगे। यह ट्रेन पटना से हटिया तक चलेगी। इस रूट पर दो बार ट्रायल रन सफल रहा है। पहले दिन 10 स्कूली बच्चों को निःशुल्क रांची से पटना तक का सफर कराया जायेगा। यह विद्यार्थी उद्घाटन के दौरान हरी झंडी दिखाने के समय भी मौजूद रहेंगे। बच्चों का चयन निबंध, पेंटिंग और कविता प्रतियोगिता के आधार पर किया जाएगा। इनमें सातवीं, आठवीं, नौवीं और 10वीं के बच्चे शामिल हो सकेंगे। उद्घाटन के बच्चों की पेंटिंग को भी प्रदर्शित किया जाएगा। दक्षिण पूर्व रेलवे रांची के वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी माणिक शंकर ने स्कूलों को चिट्ठी भेजी है। इसमें कहा गया है कि प्रतियोगिता परीक्षा आयोजित कर बच्चों का चयन किया जाए। विद्यार्थियों के साथ दो शिक्षक भी इस यात्रा के लिए मनोनीत किए जाएंगे। यह शिक्षक बच्चों के साथ पटना तक जाएंगे। सुरक्षा के मद्देनजर टाटीसिलवे, नामकुम, आरा गेट, चुटिया, रांची स्टेशन और अरगोड़ा स्टेशन पर आरपीएफ के 100 से अधिक जवानों को तैनात किया गया है। उद्घाटन कार्यक्रम के लिए रांची स्टेशन पर इंतजाम शुरू हो गए हैं। फिलहाल टेंट लगाए जा रहे हैं।

कांस्टेबल की हत्या के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने BHARKUNDA OP का किया घेराव

पत्नी के प्रेम प्रसंग में कांस्टेबल पति के हत्या की है चर्चा, पत्नी सहित दो अन्य गिरफ्तार, घटना स्थल से पांच खोखा व बाईक भी बरामद

PHOTON NEWS RAMGARH: उरीमारी ओपी में पदस्थापित कांस्टेबल पंकज कुमार दास की हत्या के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने शनिवार की सुबह भुरकुंडा ओपी का घेराव कर आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग कर रहे थें। पुलिस के समझाने-बुझाने व आरोपियों की गिरफ्तारी कर ली गई है की बात कहने पर ग्रामीण शांत हुए। मालूम हो कि शुक्रवार की रात्रि करीब साढ़े नौ बजे ड्यूटी से लौट रहे कांस्टेबल पंकज कुमार दास की सयाल 10 नंबर खान के समीप अपराधियों ने गोली मार हत्या कर दी थी। घटना की सूचना मिलते ही पतरातू एसडीपीओ डॉ. बिरेंद्र कुमार चैधरी, भुरकुंडा ओपी प्रभारी अमित कुमार, उरीमारी ओपी प्रभारी शशि भूषण कुमार, एएसआई अक्षय कुमार व मयंक प्रसाद घटना स्थल पर पहुंच मामले की छानबीन में जुट गए। घटना स्थल से पुलिस ने 5 खोखा व मृतक का अपाची बाईक जेएच 24 जे 2655 को बरामद किया। साथ ही शव को पोस्टमार्टम के लिए रामगढ़ अस्पताल भेज दिया। पंकज के सिर पर अपराधियों ने चार गोली मारी थी। इधर घटना के बाद हजारीबाग एसपी मनोज कुमार चैथे ने भी घटना स्थल का दौरा किया। साथ स्थानीय पुलिस को कई आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। घटना के बाद भुरकुंडा पुलिस छापामारी अभियान चलाकर मृतक की पत्नी नैना देवी सहित मुन्ना पासवान एवं 8 नंबर सयाल निवासी ओमप्रकाश सिन्हा को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार इनके पास से हत्या में प्रयुक्त रिवाल्वर भी बरामद कर ली गई है। बताया जाता है कि सांकुल निवासी धीरज राम के पुत्र पंकज दास की दो माह पूर्व ही बादम निवासी सुरेंद्र राम की पुत्री नैना के साथ विवाह हुआ था। सूत्रों के अनुसार दोनो के बीच अच्छे रिश्ते नहीं थें। आये दिन पति-पत्नी में लड़ाई-झगड़ा होते रहता था। यह भी बताया जाता है कि नैना का शादी से पूर्व सेंट्रल सौंदा निवासी मुन्ना पासवान के साथ प्रेम प्रसंग था। हत्या का कारण भी यही प्रेम प्रसंग बताया जा रहा है। इधर घटना की सूचना के बाद स्थानीय लोगों की भारी भीड़ भुरकुंडा ओपी के समक्ष उमड़ी।

थाने का घेराव करते ग्रामीण ● फोटोन न्यूज

झामुमो के केंद्रीय सचिव संजीव बेदिया ने भी पतरातू एसडीपीओ से पूरे मामले की जांच कर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई करने की मांग की। घटना के बाद से ही माता-पिता सहित परिजनो का रो-रोकर बुरा हाल है। परिजन आरोपियों को फांसी की सजा देने की मांग कर रहे थें। मौके पर भुरकुंडा ओपी में पूर्व जिप उपाध्यक्ष मनोज राम सहित सैंकड़ो लोगों की भीड़ उमड़ी रही। हजारीबाग पुलिस मेस ऐसोसिएशन ने पीड़ित परिवार हर संभव मदद का दिया आश्वासन दिया। घटना के बाद पुलिस मेस ऐसोसिएशन हजारी के मंत्री उपेंद्र मिश्रा, अध्यक्ष अनिरूद्ध कुमार, संयुक्त मंत्री राणा प्रताप सिंह, कोषाध्यक्ष पारसनाथ महतो व सदस्य तेज नारायण महतो आदि परिजनो से मुलाकात कर ढ़ाढ़ स बंधाया। साथ ही इस दुख की घड़ी में परिजनो को हर संभव सहयोग करने व दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाने का आश्वासन दिया। एसोसिएशन ने बताया कि पोस्टमार्टम के बाद पंकज के शव को हजारीबाग पुलिस मुख्यालय ले जाया जायेगा। जहां पार्थिक शरीर को सलामी दी जायेगी।

खबरें ओडिशा की

ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में कार और ट्रक की टक्कर में 2 लोगों की मौत, चार गंभीर

Rourkela : सुंदरगढ़ जिला के लहुणीपाड़ा थाना क्षेत्र के तहत सूखाबांध के पास एनएच-520/215 पर कार और ट्रक की जबरदस्त टक्कर हो गई। शनिवार दोपहर को हुए इस टक्कर में 2 लोगो की मौत हो गई। वहीं 3 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए है। मृतक और घायल व्यक्ति ओडिशा के अंगुल जिले के खमार क्षेत्र के पलदाहाड़ा के निवासी है। कार में सवार लोग एक पारिवारिक समारोह में भाग लेने के लिए बलांग गए हुए थे, वापसी के क्रम में यह दुर्घटना हुई है। दुर्घटना के बाद ट्रक चालक फरार हो गया, वहीं घायलों को इलाज के लिए राउरकेला अस्पताल लाया गया है। वहीं सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंच गई है, वही मामले की जांच में जुट गई है।

पुरुष जूनियर हॉकी विश्वकप चैम्पियनशिप 5-16 दिसंबर के बीच मलेशिया में होगी

Rourkela : पुरुष जूनियर हॉकी विश्व कप चैम्पियनशिप मलेशिया में आयोजित होगा। यह चैपिंयनशिप आगामी 5 दिसंबर से 16 दिसंबर के बीच होगा। पुरुष जूनियर विश्व कप चैम्पियनशिप में कुल 16 टीमें हिस्सा लेंगी। भारत , कोरिया, स्पेन और कनाडा के साथ ग्रुप सी में है। यह नेशनल हॉकी स्टेडियम, बुकिट जलील में खेला जाएगा। एफआईएच अध्यक्ष तैयब इकराम ने हॉकी मलेशिया को बधाई दी है। उन्होंने शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए चैंपियनशिप के बेहतर ढंग से संपन्न होने की कामना की है। इस बीच आधिकारिक लोगो का भी उद्घाटन किया गया और इसमें हरा रंग पर्यावरण के प्रति प्रेम और चिंता को दशार्ने वाला प्रमुख रंग है।

बीपीयूटी और डीपीए तालाब से मो बस सेवा शुरू करने की मांग

Rourkela : शहरवासियों को इस वर्ष मो बस की सौगात मिली है। 5 जनवरी को मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने हरी झंडी दिखाकर 30 बस को शहर के विभिन्न अंचलों में रवाना किया था। अब 80 से अधिक मो बस शहर तथा आसपास के अंचलों में यात्रियों को सुविधा मिल रही है। यात्रियों को पहले जहां 20 रुपए खर्च कर ऑटो में सवारी करनी पड़ती थी अब वही 5-10 रुपए में मो बस में एसी की सवारी कर रहे है।

ओडिशा के मुख्यमंत्री ने मानसून के मद्देनजर बाढ़ से निपटने की तैयारियों की समीक्षा की

Bhubneshwar : ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने शनिवार को अधिकारियों को राज्य में मानसून की शुरूआत के साथ बाढ़ की स्थिति के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया। पटनायक ने राज्य स्तरीय प्राकृतिक आपदा समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि पिछले वर्षा कम से कम 24 जिले भारी बारिश और बाढ़ से प्रभावित हुए थे। उन्होंने कहा, जून से अक्टूबर तक का समय हमारे लिए निर्णायक होता है, इस दौरान सूखा, बाढ़ या चक्रवात की स्थिति बन सकती है। उन्होंने कहा कि राज्य ने पिछले साल आपदाओं का सफलतापूर्वक प्रबंधन किया और इसके लिए उसे केंद्र से पुरस्कार भी मिला। पटनायक ने कहा, हमें इस वर्ष किसी अन्य प्रकार की आपात स्थिति के लिए भी तैयार रहना चाहिए। प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों, बचाव और राहत कार्यों, पीने के पानी की आपूर्ति और स्वास्थ्य तथा पशु चिकित्सा सेवाओं के संबंध में पर्याप्त उपाय किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि ओडिशा आपदा त्वरित प्रतिक्रिया बल (ओडीआरएएफ) और अग्निशमन विभाग को हर समय तत्काल प्रतिक्रिया के लिए सतर्क रहना चाहिए।

छात्रा की मौत मामले में वार्डन समेत सभी शिक्षिकाओं को शोकाज

Chaibasa : पश्चिमी सिंहभूम जिले के टोंटो प्रखंड के लिसिया स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की 8वीं कक्षा की छात्रा लुदरी हेंब्रम की मौत के मामले को जिला प्रशासन ने गंभीरता से लिया है। इस संबंध में जिला शिक्षा अधीक्षक सह जिला शिक्षा पदाधिकारी ने कस्तूरबा स्कूल की वॉर्डन अनिता कुमारी समेत अन्य सभी शिक्षिकाओं को शोकॉज किया है। इस संबंध में वार्डन अनिता कुमारी ने बताया कि इस विद्यालय में कुल 6 शिक्षिकाएं कार्यरत हैं। मृगलिंडी गांव की छात्रा लुदरी हेम्ब्रम (15वर्ष) गर्मी छुट्टी के बाद 16 जून को वापस कस्तूरबा स्कूल लौटी थी। 17 जून की रात से उनकी तबीयत खराब हो गई। तबीयत खराब होने की जानकारी शिक्षिकाओं को दी गई। स्कूल में ही उसका प्राथमिक उपचार किया गया। इसके बाद उसकी तबीयत ठीक हो गई थी। घटना के दिन लुदरी सुबह का नाश्ता भी किया। लेकिन अचानक उसकी तबीयत काफी खराब हो गई। अनन-फानन में उसे सदर अस्पताल पहुंचाया गया। लेकिन यहां तैनात चिकित्सकों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। इधर घटना के बाद स्कूल प्रबंधन काफी चिंचित है। विद्यालय की एक शिक्षिका भी शनिवार को बेहोश होकर गिर पड़ी। बेहोश होकर उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल में लाकर भर्ती कराया गया। इस संबंध में जिला शिक्षा पदाधिकारी अभय कुमार शील ने बताया कि इस मामले को लेकर कस्तूरबा स्कूल की वार्डन समेत शिक्षिकाओं को शोकॉज किया गया है।

नोवामुंडी के राशन डीलरों ने सीओ को सौंपा ज्ञापन 2 जुलाई से हड़ताल पर जाने की दी है चेतावनी

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम जिले के सभी प्रखंडों के हजारों राशन डीलर अपनी 9 सूत्री मांगों को लेकर आगामी 2 जुलाई से झारखंड सरकार के खिलाफ प्रखंड से लेकर राज्यव्यापी हड़ताल पर चले जाएगें। इस संबंध में नोवामुंडी प्रखंड राशन डीलर कमेटी ने अंचल अधिकारी सह प्रखंड आपूर्ति पदधिकारी सुनील चंद्रा को शनिवार को स्मार पत्र सौंपा है। अंचलाधिकारी को सौंपे स्मार पत्र में कहा गया है कि आगामी 5 जून को प सिंहभूम डीलर संघ जिला कमेटी के नेतृत्व में उपायुक्त कार्यालय के निकट सभी प्रखंडों के राशन डीलर अपनी मांगों को लेकर सामूहिक रूप से धरना प्रदर्शन करेंगे। उपायुक्त को झारखंड सरकार के नाम 9 सूत्री मांग पत्र सौंप कर डीलरों को होने वाली विभिन्न समस्याओं के समाधान किए जाने की मांग की गई थी। लेकिन सरकार द्वारा 30 जून तक राशन डीलरों की मांगों पर किसी तरह की करवाई नही किए जाने से निराश जिले के सभी डीलर 2 जुलाई से हड़ताल पर चले जाएगें। इस दौरान सरकारी राशन डीलर न तो अपनी दुकानें खोलेगें, न ही राज्य खाद्य निगम के गोदामों से राशन आदि का उठाव करेगें। न ही सरकारी राशन कार्ड धारियों के बीच खाद्यान्न का वितरण करेगें। मांगपत्र सौंपने वालों नोवामुंडी प्रखंड डीलर संघ अध्यक्ष जितेन्द्र बोबोंगा, उपाध्यक्ष मीना सिंह बोबोंगा, सचिव घासीराम हजाम, राशन डीलर संघ के सभी सदस्य गण एवं कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष सह 20 सूत्री अध्यक्ष मनजीत प्रधान, कांग्रेस कार्यकर्ता मामूर अंसारी मौजूद थे।

सीओ को ज्ञापन सौंपते राशन डीलर ● फोटोन न्यूज

राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के तहत चलाया जा रहा कुष्ठ रोगी खोजी अभियान

PHOTON NEWS RAMGARH: राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के तहत दिनांक 15/06/2023 से 28/06/2023 तक कुष्ठ रोग खोजी अभियान चलाया जाना है। जिसके लिए रामगढ़ जिले के 1215 टोला को चिन्हित कर 201 सुपरवाइजर एवं 1157 सहियाओं के साथ 1157 टीम बनाये गए हैं। इसी क्रम में शनिवार को जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डॉ सविता वर्मा और उनकी टीम द्वारा चितरपुर, कोठार एवं मुरामकला में कुष्ठ रोगी खोजो अभियान चलाया गया। साथ ही मौके पर डॉ वर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य समाज मे कुष्ठ रोग को लेकर फैले भ्रांतियों को दूर करना एवं प्रत्येक प्रखंड के माइक्रोप्लान के अनुसार साहिया के माध्यम से घर-घर खोज अभियान किया जाना है। वहीं उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में कुष्ठ रोग कोई अभिशाप नही है बल्कि समुचित उपचार से ठीक होने वाला बीमारी है। साथ ही उन्होने सभी से अपील करते हुए कहा कि यदि किसी व्यक्ति को अपने शरीर या किसी अन्य के शरीर पर लाल रंग का दाग दिखे तो उसकी जांच आवश्य कराये। जिले के सभी सरकारी अस्पतालों में इसका मुफ्त जांच, मुफ्त इलाज, मुफ्त दवाओं के साथ प्रोत्साहन राशि व अन्य सामग्रियां भी दी जाती हैं। ज्ञात हो कि इस अभियान के तहत अब तक कुल 411 संदिग्ध लोगो मे 14 लोगो के कुष्ठ से पीड़ित होने की पहचान की गई गई और वे सभी इलाजरत है। मौके पर काय चिकित्सक डॉ सावन कुमार, साहिया, सुपरवाइजर सहित अन्य उपस्थित थे।

राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम चलाती स्वास्थ्य विभाग की टीम.

जिला के सभी सरकारी भवनों में तड़ित चालक लगाने की मांग

PHOTON NEWS CHAIBASA :

● युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने मांग को लेकर उपायुक्त को सौंपा ज्ञापन

युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष प्रीतम बांकिरा ने उपायुक्त को ज्ञापन सौंपकर जिले के सभी सरकारी विद्यालयों, आंगनबाड़ी केंद्र, स्वास्थ्य उपकेंद्र समेत अन्य सभी सरकारी भवनों में तड़ित चालक लगाने ने मांग की है।

युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष प्रीतम बांकिरा ने कहा कि जिला चारों ओर से घने जंगलों से घिरा हुआ है। प्रत्येक वर्ष बारिश के मौसम में वज्रपात से दर्जनों लोगों की मृत्यु हो जाती है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार पिछले तीन वर्षों में लगभग 100 से भी ज्यादा संख्या में वज्रपात के कारण मृत्यु हुई है। इस कारण बारिश के दिनों में जिलेवासी हमेशा असुरक्षित महसूस करते हैं और भय के साये में जी रहे हैं। जिलावासियों को वज्रपात की समस्या से निजात दिलाने के लिए अविलंब सभी सरकारी विद्यालयों, आंगनबाड़ी, स्वास्थ्य केन्द्रों व उपकेंद्रों समेत अन्य सभी सरकारी भवनों में अविलंब तड़ित चालक लगाना सुनिश्चित किया जाए ताकि बारिश के दिनों में भी जिला के किसान निडर होकर अपने कृषि कार्य एवं सभी आम लोग अपना दैनिक कार्य को कर सके।

इस सावन पड़ेगी 8 सोमवारी, 19 साल बाद बन रहा संयोग पूरे 58 दिन गूंजेगा शिव का जयकारा

चार जुलाई से शुरू हो रहा SAWAN, एक नहीं दो माह का होगा भगवान शिव का प्रिय महीना

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR: सावन का महीना भगवान शिव को को सबसे प्रिय और समर्पित है। इस लिए ही इसे श्रावण मास भी हा जाता है। लेकिन इस बार का सावन कुछ खास है। क्योंकि यह इस दशक का सबसे लंबा सावन होगा।

ज्योतिषाचार्य डॉ. प्रमोद मिश्र की मानें तो इस साल श्रावण मास 4 जुलाई को शुरू होगा और 31 अगस्त को खत्म होगा। 18 जुलाई से 16 अगस्त तक अधिक मास रहेगा। इस तरह सावन 58 दिनों का होगा। ये दुर्लभ संयोग करीब 19 साल बाद बन रहा है। जो इस बार के सावन को खास बना रहा है। इससे पहले ऐसा संयोग 2004 में बना था।

उन्होंने बताया कि सावन में भी सोमवार के दिन का विशेष महत्व है। बड़ी संख्या में लोग इस दिन व्रत रहते हैं जो सावन के अन्य दिनों में मंदिर न भी जाए वे लोग सोमवारी को जरूर भोले नाथ को जल चढ़ाते हैं। इस बार के सावन में 8 सोमवारी पड़ रहा है।

ऐसे में भक्तों को भोले नाथ के प्रिय महीने में उनी आराधना करने का इस बार अधिक अवसर मिलने जा रहा है। तो आइए आपको बताते हैं सावन के महीने से जुड़ी खास बातें।

कब कब होगी सावन की सोमवारी

सावन के सोमवार के व्रत का खास महत्व माना गया है। अमूमन सावन में 4 या 5 सोमवार पड़ता है लेकिन इस बार सावन के सोमवारी की 8 है। जहां 4 सोमवार जुलाई में पड़ेगा वहीं 4 अगस्त माह में।

सावन में कब-कब पड़ेगा सोमवार

सावन का पहला सोमवार	:	10 जुलाई 2023
सावन का दूसरा सोमवार	:	17 जुलाई 2023
सावन अधिकमास का पहला सोमवार	:	24 जुलाई 2023
सावन अधिकमास का दूसरा सोमवार	:	31 जुलाई 2023
सावन अधिकमास का तीसरा सोमवार	:	7 अगस्त 2023
सावन अधिकमास का चौथा सोमवार	:	14 अगस्त 2023
सावन का तीसरा सोमवार	:	21 अगस्त 2023
सावन का चौथा सोमवार	:	28 अगस्त 2023

क्या है सावन के महीने का महत्व

माना जाता है कि सावन का महीना भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। ऐसी मान्यता है कि अगर इस महीने में उनकी विधि-विधान से पूजा-अर्चना की जाए, तो भोले नाथ बहुत जल्दी प्रसन्न हो भक्त की मनोकामना पुरा करते हैं। ऐसे में शिव जी के तमाम भक्त अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए सावनभर उनकी विशेष पूजा करते हैं और कावंड यात्रा निकाल उनका जलाभिषेक करते हैं।

क्यों भगवान शिव को बेहद प्रिय है सावन का महीना

कहा जाता है कि दक्ष पुत्री सती ने जब अपने प्राणों को त्याग दिया था, तो महादेव दुख में इतने डूब गए थे कि घोर तप में लीन हो गए थे। तब माता सती से पर्वतराज हिमालय पुत्री पार्वती के रूप में जन्म लिया और महादेव को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तप किया। सावन माह में ही भगवान शिव उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर उनकी मनोकामना को पूरा किया इस तरह ये महीना शिवजी और माता पार्वती के मिलन का महीना माना जाता है। वहीं विवाह के बाद भगवान शिव पहली बार ससुराल गए थे।

मांगों पर ठोस कार्रवाई नहीं हुई तो यूनियन आंदोलन के लिए बाध्य होगी : देवेंद्र सिंह

राष्ट्रीय कोयला मजदूर यूनियन व बिरसा प्रबंधन के बीच हुई वार्ता

बिरसा पीओ कार्यालय में यूनियन प्रबंधन से वार्ता करती राष्ट्रीय कोयला मजदूर यूनियन ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RAMGARH: राष्ट्रीय कोयला मजदूर यूनियन द्वारा पूर्व में दिए गए 9 सूत्री मांग-पत्र के आलोक में शनिवार को बिरसा पीओ कार्यालय में यूनियन व प्रबंधन के बीच वार्ता हुई। इसमें यूनियन के क्षेत्रीय सचिव देवेन्द्र कुमार सिंह व बिरसा पीओ डी शिवा दास मुख्य रूप से शामिल थें। इस दौरान मजदूरों के वेतन भुगतान से पहले पे स्लीप देने, शॉवेल संचालक की कमी को दूर करने, मशीनी में लगे एसी को दुरूस्त करने, 10-12 साल से कटेगरी वन में कार्यरत धनेश्वर साव को कटेगरी टू में प्रमोशन देने, पीट मैन परीक्षा का परिणाम अविलंब घोषित करने, बिरसा कैंटीन की व्यवस्था दुरूस्त करने, मजदूरों के सिक लिव में पूर्व की तरह संडे को शामिल करने, ट्रांसपोर्टिंग के दौरान यातायात नियमो का पालन करने, तारा प्रसाद के आवेदन पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने आदि मांगों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। मौके पर बिरसा पीओ डी शिवा दास ने सभी मांगों पर सकारात्मक पहल करने की बात कही। वहीं यूनियन के क्षेत्रीय सचिव देवेन्द्र कुमार सिंह ने कहा कि जल्द ही इस दिशा में ठोस कार्रवाई नहीं हुई तो यूनियन आंदोलन के लिए बाध्य होगी। वार्ता में प्रबंधन की ओर से मैनेजर रामेश्वर मुंडा, कार्मिक प्रबंधक विकास रंजन व यूनियन की ओर से एनएस प्रसाद, अनिल सिंह, मोतीलाल सिंह, विमल बिहारी श्रीवास्तव, विद्युत प्रकाश लाल, तारा प्रसाद, प्रभाष मोदक, साबिर, विजय उरांव, गोविंद मुंडा, सूरज कुमार, राम सुमिरन आदि शामिल थे।

मंत्री बन्ना गुप्ता ने लगाया जनता दरबार

लोगों की समस्याओं का ऑन द स्पॉट कराया समाधान

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:
स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने कदमा स्थित कार्यालय में सुबह-सुबह जनता दरबार लगा कर क्षेत्र से आए लोगों की समस्याओं को सुना और अधिकारियों को उनके निष्पादन का निर्देश दिया। शनिवार को जनता दरबार में फरयादियों ने अपनी समस्याएं बताई। कई फरियादियों की समस्याओं का ऑन दि स्पॉट ही निष्पादन हो गया,जबकि कई लोगों की समस्या का समाधान करने के लिए मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया। मौके पर पहुंची धतकीडीह की रहने वाली महिला लक्ष्मी मुखी को व्हीलचेयर उपलब्ध कराया गया। जनता दरबार में बिजली बिल,पेयजल की समस्या, रांची रिम्स में इलाज, कदमा में नाली की समस्या,पेवर ब्लॉक से निर्मित सड़क बनाने से संबंधित आवेदन, जुस्को की वाटर कनेक्शन से संबंधित समस्या,विधवा महिलाओं का विधवा पेंशन शुरू करवाने संबंधित समस्याओं को जनता ने माननीय मंत्री के समक्ष रखा। जनता दरबार में माननीय मंत्री ने विद्धा पेंशन,विधवा पेंशन के 325 स्वीकृत लोगों को पेंशन स्वीकृति प्रमाण पत्र वितरण किया। इस दौरान भोला गोस्वामी, मनोज झा,प्रभात ठाकुर, बबुआ झा, तिवारी,रवि दुबे,माजिद अख्तर, कैलाश रजक, जय प्रकाश साहू, इरशाद हैदर, राजेश बहादुर, धनु महतो, जितेंद्र सिंह, संजीव झा, छोटू शहनवाज अहमद, बबन शुक्ला, सूरज हरपाल, सुमित ठाकुर, राजेश गोराई, हरिदास, बिशु दा, जी एम रजा, सहित बहुत सारे कार्यकर्ता उपस्थित थे।

साइबर अपराधी विशाल पांडे को लेकर JAMSHEDPUR पहुंची पुलिस

पांच करोड़ रुपये से अधिक की कर चुका है ठगी, टीएमएच के डॉक्टर को भी बनाया अपना शिकार

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:
टीएमएच के डॉक्टर से 1.81 लाख रुपए की ठगी करने के मामले में जमशेदपुर पुलिस साइबर ठगी के आरोपी विशाल पांडेय को उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर जेल से लेकर जमशेदपुर पहुंची है।
विशाल पांडेय को यूपी पुलिस के क्राइम ब्रांच ने जांच के क्रम में पश्चिम बंगाल के कुल्टी इलाके से 4 माह पूर्व गिरफ्तार किया था। उसकी गिरफ्तारी के बाद पूछ ताछ में यह बात सामने आयी थी की उसने कई राज्यों में साइबर ठगी की है।
उसने अलग अलग व्यक्तियों से बैंक अधिकारी या कर्मचारी बनकर उनके बैंक से संबंधित गोपनिय जानकारियां ली और फिर उनके खाते से राशि निकाल ली। इससे संबंधित कई मामली भी विशाल पांडेय के खिलाफ दर्ज है।

5 करोड़ से अधित की ठगी कर चुका है विशाल

बंगाल के कुल्टी इलाके के रहनेवाले विशाल पांडेय कितना बडा साइबर ठग है इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि उस पर 5 करोड़ रुपए से भी ज्यादा की ठगी करने का आरोप है। बिष्टूपुर की साइबर पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है पुलिस यह जानने का प्रयास कर रही है कि उसके गैंग में कितने लोग हैं और कहां रहते हैं।
कैसे वह लोगों को अपने जाल में फांसने के बाद ठगी करता है। पुलिस उसके पुरे गिरोह का पता लगाने में जुटी है। उसका जामताडा गैंग से तार जुड़े होने की बात सामने आ रही है।

सात साल पहले प्राइवेट कंपनी में करता था काम

विशाल के बारे में पूछताछ में पुलिस को पता चला है कि वह पहले किसी प्राइवेट कंपनी में नौकरी करने का काम करता था। नौकरी छूटने के बाद उसने अधिक से अधिक पैसा कमाने के लिये अपने दिमाग को चलाना शुरू कर दिया। इसी क्रम में उसने साइबर अपराध का रास्ता अख्तियार किया और इसके जरिए उसने 100 से अधिक लोगों को अपने जाल में फंसा करोडों की ठगी कर साइबर अपराध के क्षेत्र में अपना अपनी अलग पहचान बनायी।

BRIEF NEWS

विवाद के बीच सेंट्रल सिख स्त्री सत्संग सभा की कार्यकारिणी घोषित

Jamshedpur : सेंट्रल सिख स्त्री सत्संग सभा की नवनिर्वाचित प्रधान रविंदर कौर ने सेंट्रल कमेटी कार्यालय में हुई बैठक में अपनी नई कमेटी की घोषणा की। वैसे आपको बता दें कि रविंद्र कौर के प्रधान बनने के बाद मानगो की पदाधिकारी को महासचिव बनाये जाने की घोषणा के बाद सभा में काफी दिनों से खींचतान चल रही थी, जिसमें अखिकार रविंद्र कौर सफल हो गई। इसे शांत करने के लिए कई बैठकों का दौर चला था। उन्होंने अपनी कमेटी में चेयरमैन कमलजीत कौर को बनाये जाने की घोषणा पहले ही कर चुकी थीं। अब सुखजीत कौर को संरक्षक बना दिया गया है। बीबी दलबीर कौर, जसवंत कौर को भी संरक्षक बनाया है। वहीं मुख्य सलाहकार में बलबीर कौर, रविंदर कौर भाटिया, हरजिंदर कौर, सुखविंदर कौर को रखा है। प्रधान रविंदर कौर ने अपने संबोधन में कहा कि मैंने अपने स्तर से सबको स्थान देने की कोशिश की है। इसके बावजूद अगर कोई नाम छूट जाता है तो उसे मैं पुनः जोड़ दूंगी। उन्होंने सभी लोगों के प्रति आभार प्रकट किया। बैठक का संचालन कमलजीत कौर ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन सुखजीत कौर ने किया।
तीन वरीय उपाध्यक्ष, 12 उपाध्यक्ष बनाई गई: वरीय मीत प्रधान-गुरमीत कौर, पलविंदर कौर, बलविंदर कौर. मीत प्रधान झ राजेंद्र कौर मनजीत कौर, कमलजीत कौर, मनजीत कौर, लखविंदर कौर कमलेश कौर, इंद्रजीत कौर, राजेंद्र कौर, जेबा कौर, बलविंदर कौर, सुखबीर कौर, पलविंदर कौर महासचिव- सुखवंत कौर, सहायक महासचिव- परमजीत कौर, कोषाध्यक्ष- राजेंद्र कौर, सचिव-जसवीर कौर, जोगिंदर कौर, बलविंदर कौर, चरणजीत कौर बलविंदर कौर, रज्जी कौर, बलजीत कौर, जसविंदर कौर, संयुक्त सचिव- गीता कौर, सुरेंद्र कौर, जसवीर कौर, शालू मारवाह, मनजीत कौर, कंचन कौर, कमलजीत कौर को बनाया गया।

झारखंड श्रमिक संघ झामुमो ने नियोजन पदाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

Jamshedpur : झारखंड श्रमिक संघ झामुमो की ओर से नियोजन पदाधिकारी पूर्वी सिंहभूम जमशेदपुर को एक ज्ञापन सौंपा है। ज्ञापन के माध्यम से संघ ने झारखंड सरकार द्वारा निर्देशित जमशेदपुर नियोजनालय में पिछले 7 और 22 जून को रोजगार मेले में हुए रिक्तियाँ व चयनित उम्मीदवार को सार्वजनिक नहीं किया गया है। इसके अलावे ज्ञापन के माध्यम से नियोजन मेला में भर्ती कराने वाले विभिन्न कंपनियों , संवेदकों व संस्थानों द्वारा चयनित एवं नियुक्त उम्मीदवारों की सूची अब तक सार्वजनिक नहीं किये जाने का कारण पूछा है। संघ संयुक्त केंद्रीय महासचिव शैलेंद्र मैती ने ज्ञापन के माध्यम से पूछा है कि अधिसूचना के अनुरूप अभ्यर्थियों के नियोजन की सूची को सार्वजनिक नहीं किया गया।साथ ही उपरोक्त नियोजन अभियार्थियों का संयोजन किस किस संस्थानों में एवं किस श्रेणियों में की गई है। और नियोजन के पूर्व उनके ट्रेनिंग की क्या व्यवस्था की गई है। यह भी सार्वजनिक नहीं है।उन्होंने नियोजन पदाधिकारी से अनुरोध करते हुए कहा कि इसमें जो भी भूल चूक हुआ है इसे अविलंब सुधार किया जाए।साथ ही सार्वजनिक भी किया जाए। उन्होंने बताया कि ज्ञापन प्रतिलिपि प्रधान सचिव श्रम नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग झारखंड सरकार और केंद्रीय उपाध्यक्ष, झारखंड श्रमिक संघ को भेजा गया है।

मरीन ड्राइव में ट्रक पलटा, चालक घायल

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:
कदमा थाना अंतर्गत मरीन ड्राइव के पास दोमुहानी से साकची की तरफ जा रही ट्रेलर गाड़ी अनियंत्रित होकर पलट गया। जहां इस घटना में चालक को गंभीर चोट आई है, जिसे इलाज के लिए एमजीएम अस्पताल ले जाया गया।
जानकारी के अनुसार कदमा मरीन ड्राइव प्रतिमा नगर में उस समय अफरा-तफरी का माहौल उत्पन्न हो गया। जब एक अनियंत्रित ट्रेलर डिवाइडर से टकराकर पलट गया। घटना की जानकारी मिलते ही बस्तीवासी एकत्रित हुए और ड्राइवर को ट्रक से बाहर निकालने का प्रयास करने लगे, जिसमें एक युवक चोटिल हो गया, जिसे इलाज के लिए कदमा वीणापानी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दूसरी तरफ स्थानीय लोगों की मदद से चालक को एमजीएम अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। घटना की सूचना मिलते ही कदमा पुलिस मरीन ड्राइव पहुंची और गाड़ी को जप्त कर ली।
पुलिस पदाधिकारी ने बताया कि चालक नशे में था, जिसकी वजह से ट्रेलर अनियंत्रित होकर पलट गया। उन्होंने कहा कि गाड़ी को जप्त कर आगे की कार्रवाई की जा रही है। चालक को इलाज के लिए भर्ती कराया गया है।

मरीन ड्राइव के पास पलटा ट्रक ● फोटोन न्यूज

एलआईसी कॉलोनी में ताला तोड़कर 50 हजार के सामान की हुई चोरी

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:
घाटशिला थाना क्षेत्र के एलआईसी कॉलोनी में शनिवार की दोपहर एक घर में हजारों रुपये की चोरी होने का मामला प्रकाश में आया है। घर पिछले चार महिनों से बंद पड़ा था। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस घटना स्थल पहुंची और मामले की जांच में जुट गई है। घर में चोरी का खुलासा तब हुआ जब शनिवार को घर के बगल में रहने वाले एक व्यक्ति ने घर को रेंट पर लगाने के लिए घर को खोला। तब उन्होंने देखा की घर के मुख्य दरवाजे का ताला का कुंडी टूटा हुआ है और ताला को लटकाया गया है।
घर में जाकर देखा तो सभी सामान बिखरे पड़े थे। घर एलआईसी कोलोनी निवासी नित्यानंद ठाकुर का बताया जाता है। वह वर्तमान में बैंगलुरू में रहते है। नित्यानंद ठाकुर के अनुसार घर के एक टिफिन बॉक्स में कान के सोने की बाली के साथ कई चांदी का सिक्का रखा हुआ था, इस बात की उन्हें फोन पर जानकारी दे दी गई है।
उसकी कीमत लगभग 50 हजार के आसपास होगी। इस संबंध में घाटशिला पुलिस का कहना है कि घर चार महिने से बंद पड़ा था, कब चोरी हुई यह कहना मुश्किल है। अगर घर वाले लिखित शिकायत करते है तो मामले की जांच होगी।

कैंपस सेलेक्शन में एनटीटीएफ के 8 छात्रों को मिला 2.44 लाख का पैकेज

गोवा स्थित कंपनी में काम के लिए किया गया है चयन

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:
गोलमुरी स्थित एनटीटीएफ आर डी टाटा तकनीकी संस्थान में सिपला कंपनी की ओर से कैंपस सेलेक्शन का आयोजन किया गया। कंपनी द्वारा आयोजित कैंपस सेलेक्शन में सबसे पहले लिखित परीक्षा,छात्रों की व्यक्तिगत प्रतिभा को परखा गया। इसके बाद
फाइनल सेलेक्शन इंटरव्यू राउंड के बाद किया गया। जिसमे छात्रों ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर संस्थान को गौरांवित किया। कंपनी द्वारा एनटीटीएफ के 8 छात्रों को 2.44 लाख के पैकेज पर लॉक किया गया। छात्रों को गोवा स्थित कंपनी में काम के लिए चयनित किया गया है। सभी छात्रों ने तीनों राउंड के सेलेक्शन प्रक्रिया में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दे अपनी जगह इस कंपनी में बनाई।सभी चयनित छात्र डिप्लोमा इन मेकेट्रोनिक इंजीनियरिंग के फाइनल ईयर के है, जिसमें संजय कुमार, सुदर्शन कुमार, कुंवर प्रताप सिंह, प्रियांशु प्रसाद, ऋतिक घोष, विशाखा पानी, एलन मंडल, संतोष कुमार सिंह शामिल है। छात्रों की इस उपलब्धि पर संस्थान द्वारा उन्हें उज्जवल भविष्य की कामना की गई। इसमें संस्थान के प्लेसमेंट पदाधिकारी नेहा एवं मिथिला ने पूरा सहयोग किया। प्राचार्य प्रीता जॉन ने सभी छात्रों को उनके उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं दी। रमेश राय ,पंकज कु गुप्ता, दीपक सरकार अनिल के जवाली प्रीति मंजुला हरीश कुमार साथ उप-प्रबंधन प्रशासनिक अधिकारी वरुण कुमार ने भी छात्रों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

कैंपस सेलेक्शन के बाद एनटीटीएफ के छात्र ● फोटोन न्यूज

पीएचडी प्रवेश परीक्षा आज दो पालियों में होगा आयोजन

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:
जमशेदपुर वीमेंस यूनिवर्सिटी की ओर से शैक्षणिक सत्र 2023 के लिए आयोजित पीएचडी प्रवेश परीक्षा रविवार 25 जून को दो पालियों में होगी। प्रथम पाली पूर्वाह्न 11 बजे से 12 बजे तथा द्वितीय पाली दोपहर 12.45 बजे से 2.15 बजे तक चलेगी। प्रथम पाली के लिए रिपोर्टिंग टाइम 10 बजे जबकि द्वितीय पाली के लिए 12.15 बजे होगा। बीच में 12 से 12.15 तक 15 मिनट का ब्रेक भी होगा। यूनिवर्सिटी की कुलपति प्रो अंजिला गुप्ता ने पीएचडी प्रवेश परीक्षा को संपन्न कराने के लिए गठित समिति और परीक्षा विभाग को परीक्षा के सफल आयोजन कर निर्देश दिया है। उनके अनुसार यह यूजीसी के वर्तमान प्रावधानों के अनुरूप यूनिवर्सिटी की पहली पीएचडी प्रवेश परीक्षा होगी तथा क्षेत्र विशेष की छात्राओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शोध का प्रथम चरण है। उन्होंने बताया कि वे सभी छात्राएं प्रथम जमशेदपुर वीमेंस यूनिवर्सिटी रिसर्च एंट्रेंस टेस्ट-जेडब्ल्यूआरईटी 2023 में शामिल हो पाएंगीं, जिन्होंने निर्धारित तिथि तक इसके लिए आवेदन किया था। विदित हो कि जमशेदपुर वीमेंस यूनिवर्सिटी द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की वर्तमान नियमावली के अनुसार तय मानकों का अनुपालन करते हुए योग्यताधारी छात्राओं एवं प्रवेश परीक्षा में शामिल होने के लिए इच्छुक महिला उम्मीदवारों से विगत 20 अप्रैल तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किया गया था। विश्वविद्यालय में अलग-अलग स्नातकोत्तर विभागोंझ अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, हिंदी, गृह विज्ञान, संगीत, उड़िया, राजनीति विज्ञान, उर्दू, वाणिज्य, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित विषय के अंतर्गत पीएचडी में पंजीकरण के लिए यह परीक्षा आयोजित की जा रही है।

डीबीएमएस कॉलेज में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का हुआ आयोजन

डीबीएमएस कॉलेज में विजेता प्रतिभागी व छात्र ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:
कदमा स्थित डीबीएमएस कॉलेज सभागार में एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में मुख्य रूप से राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय नदियों, पहाड़ों पर चर्चा की गई। छात्रों के लिए यह मनोरंजक और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम ' इको क्लब' के सौजन्य से किया गया।कार्यक्रम में अंजली गणेशन ने क्वीज मास्टर की भूमिका और प्रो मौसमी दत्ता ने निर्णायक की भूमिका निभाई। कार्यक्रम में स्वर्णरेखा, ब्रह्मपुत्र जमुना और सरस्वती टीम ने भाग लिया। जिसमें प्रथम पुरस्कार स्वर्णरेखा टीम की स्वाति और मणिमाला महतो द्वितीय पुरस्कार सरस्वती टीम की सीमा और शैलजा ने जीती। पहला पुरस्कार प्राचार्या डॉ. जूही समर्पिता, दूसरा पुरस्कार उप प्राचार्या डॉ. मोनिका उप्पल ने दिया इस सभागार में प्रोफेसर डॉ. अरुण सज्जन, सुदीप प्रमाणिक, पामेला घोष दत्ता, अर्चना कुमारी, पूनम कुमारी, श्रीमती कंचन कुमारी, गायत्री कुमारी, ईवा शिप्रा मुंडू, अमृता चौधरी,अभिजीत डे, वीरेन्द्र पाण्डेय, जुलियन अंधोनी उपस्थित थे।

विश्व सफेद दाग दिवस पर विशेष : चिकित्सक डॉ राजीव ठाकुर ने बताया- लाइलाज नहीं है यह बीमारी

डॉक्टरों ने किया ऐसा चमत्कार कि हो गई मुन्ना-मुन्नी की शादी

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:
शहर के कदमा निवासी मुन्नी कुमारी की शादी बार-बार टूट जा रही थी। इसका वजह सफेद दाग बन रहा था। एक बार तो सबकुछ फाइनल हो गया। यहां तक की इंगेजमेंट की तिथि भी तय हो गई। इसी बीच मुन्नी को अंगूठी पसंद करने के लिए बुलाया गया था। तभी उसके अंगुली पर लड़के की बहन का नजर चली गई। बस क्या था। घर पहुंचते-पहुंचते पता चला कि शादी टूट गई। इससे न सिर्फ मुन्नी आहत हुई बल्कि उसके माता-पिता भी काफी दुखी हुएं। ठीक इसी तरह की घटना गोलमुरी निवासी मुन्ना के साथ भी हुई। मुन्ना ओडिशा के एक निजी कंपनी में काम करता है। उसका बड़ा भाई टाटा स्टील में कार्यरत है। मुन्ना की लंबाई, चेहरे का रंग व नौकरी अच्छी है लेकिन उसके गर्दन पर एक सफेद दाग की निशानी है। कई-कई बार उनकी शादी ठीक होने के कगार पर पहुंचकर टूट गई। अंत में उन्होंने तय कर लिया था कि अब शादी नहीं करेंगे। लेकिन, उनके किस्मत में शादी होना लिखा था। ऐसे में मुन्ना व मुन्नी दोनों ही शहर के जाने-माने चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. राजीव ठाकुर के पास पहुंचे। इस दौरान उन्होंने अपनी समस्याएं बताई तो पता चला कि इसका शत प्रतिशत इलाज संभव है। उसके 32 दिन के बाद ही दोनों का सफेद दाग गायब हो गया और दोनों की अलग-अलग जगहों पर शादी हुई। फिलहाल मुन्नी की बिरसानगर में शादी हुई है और उसका डेढ़ साल का एक बच्चा भी है।

सफेद दाग क्या है

चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. राजीव ठाकुर ने बताया कि शरीर पर सफेद दाग पिगमेंट निर्माण में गड़बड़ियों के कारण होती है। सफेद दाग के रोगियों में मेलेनोसाइट्स कोशिकाएं अनुपस्थित होती हैं, जिसके कारण त्वचा पर सफेद दाग होने लगता है। गर्मी के दिनों में इस तरह के मरीज बढ़ जाते हैं। उन्हें तेज धूप बर्दाश्त नहीं हो पाता।

तीन तरह से होता इलाज

डा. राजीव ठाकुर ने बताया कि सफेद दाग का इलाज तीन तरह से होता है। हालांकि, मरीज की स्थिति देखकर इलाज का स्टेज तय किया जाता है। अगर मरीज के शरीर के किसी भाग में थोड़ा सा सफेद दाग है तो फिर इसे दवा व मलहम के माध्यम से ठीक हो जाता है। वहीं, अगर दवा सही ढंग से काम नहीं किया तो फिर फोटो थेरेपी दी जाती है। यह विधि काफी कारगर है। दो या तीन दिनों के अंतराल पर इसे दिया जाता है। वहीं, जब आपके शरीर में ज्यादा सफेद दाग हो गया है और आप जल्द से जल्द उससे मुक्ति पाना चाहते हैं तो उसकी सर्जरी की जाती है। दरअसल, इसमें मेलानोसाइट ग्राफ्टिंग द्वारा मरीज के जांघ से स्वस्थ त्वचा लेकर सफेद वाले भाग में ग्राफ्ट कर दिया जाता है। इससे सफेद दाग बिल्कुल ठीक हो जाता है। आज के समय में सबसे ज्यादा इसी पद्धति की मांग है।

ये हैं सफेद दाग के लक्षण

- जब आपके चेहरे व उस हिस्से का बाल का रंग में बदलाव दिखे तो सतर्क हो जाएं। यह सफेद दाग का शुरूआती लक्षण हो सकता है।
- चोट लगने के बाद अगर आपके शरीर से सफेद दाग नहीं जाए तो किसी चर्म रोग विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए। यह भी शुरूआती लक्षण हो सकता है।
- अगर आपके शरीर पर कहीं सफेद दाग है और वहां पर बार-बार खुजली हो रही है तो उसे नजरअंदाज नहीं करें।
- अगर आपके शरीर पर सफेद दाग है और उस जगह के बाल काला है तो उस दौरान दवा जल्दी काम करता है।

योग शिविर में अवसाद, तनाव व अनिद्रा जैसी मानसिक बीमारी के लिए बताये गए उपाय

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 7 दिवसीय योग एवं मेडिटेशन शिविर का चौथा दिन हठयोग और राजयोग का अभ्यास कराया गया। शिविर में बड़े उत्साह से लोगों ने भाग लिया।
इस अवसर पर शिविर में टाटा मेन हॉस्पिटल में रेडियोलौजी विभाग हेड डॉ. राजेश ने हठयोग जैसे कि आसन, प्राणायाम, क्रियाए के बारे में जानकारी दी. उन्होंने बताया कि राजयोग में किसी प्रकार के आसन या मुद्रा की आवश्यकता नहीं होती। यह सहज राजयोग है। योग का अर्थ ही होता है जोड़ यानी कनेक्शन । जब हम ईश्वर को याद करते है किसी संबंध विशेष से, खुद को आत्मा समझ कर, तब आत्मा में एक उर्जा का संचार होता है जो हमारी इच्छा शक्ति को बढ़ाता है और मनोरोगों से बचाता है । हठयोग शरीर को स्वस्थ रखने में और बहुत सारी बीमारियों को नियंत्रण करने में सहयोगी है । राजयोग अवसाद, तनाव, अनिद्रा जैसी मानसिक और भावनात्मक परेशानियों में अत्यंत लाभदायक है। डॉ. राजेश ने बताया कि 25 जून को सुबह 7:30 से 9:30 बजे तक ब्रह्माकुमारीज के सोनारी, मैरीन ड्राइव स्थित स्थानीय मुख्य सेवाकेंद्र युनिवर्सल पीस पैलेस में निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जायेगा। शहर के हर वर्ग के लोग इस शिविर का लाभ ले सकते हैं, यह शिविर सभी के लिए खुला है।

शहबाज का कबूलनामा

जिस वक्त वाशिंगटन में अमेरिका के दिग्गज राजनेता और उद्यमी भारतीय अर्थव्यवस्था की शान में कसीदे पढ़ रहे थे, ठीक उसी समय फ्रांस की राजधानी पेरिस में पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ का विलाप पूरी दुनिया ने सुना। बकौल शरीफ, दुनिया के कर्जदाता बड़े देशों के पास जंग में लगाने के लिए तो अरबों डॉलर हैं, मगर पाकिस्तान को देने के लिए नहीं। वे सैलाब से तबाह पाकिस्तान को कर्ज देते समय ब्याज की दरें ऊंची कर देते हैं। शहबाज शरीफ का यह बयान उनके मुल्क की दयनीयता का कबूलनामा है। निस्संदेह, यह अत्यंत त्रासद है और एक जिम्मेदार पड़ोसी होने के नाते हम इस बात से प्रसन्न नहीं हो सकते कि संसाधनों से प्रचुर पाकिस्तान आज इस स्थिति में जा पहुंचा है। एक दौर था, जब पाकिस्तान की माली हालत हमसे बेहतर थी और पश्चिम एशिया के इस्लामी देश उसकी ओर उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे थे। मगर आज अरब देशों ने भी उससे किनारा कर लिया है और पाकिस्तानी हुक्मरां कभी तुर्की, कभी बीजिंग, तो कभी अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष के दरवाजे पर मिन्नत-समाजत करते नजर आते हैं। पाकिस्तान इस हाल तक क्यों पहुंचा, यह किसी शोध का विषय नहीं रहा, बल्कि यह दीवार पर लिखी एक ऐसी तहरीर है, जिसे कोई भी पढ़-समझ सकता है, और सबक ले सकता है। लेना भी चाहिए। अलबत्ता, अध्ययन का मसला यह है कि वहां के सत्ता प्रतिष्ठानों में देश की इस दुर्दशा को लेकर ईमानदार चिंता क्यों नहीं दिखती? पाकिस्तानी रहनुमा इतने अदूरदर्शी कैसे हो सकते हैं कि श्रीलंका के हालात को देखने के बाद भी घरेलू हालात को दुरुस्त करने के बजाय वे अमीर मुल्कों से शिकायत कर रहे हैं? अमेरिका, चीन और वैश्विक वित्तीय संस्थानों से मिली आर्थिक मदद का जिस तरह वहां बंदरबांट होता रहा और पिछले दरवाजे से उसे आतंकी तंजीमों की मदद पर खर्च किया गया, उसके बाद इस्लामाबाद की साख जमीन पर लोट रही है, तो हैरत कैसी? फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स ने पिछले साल अक्तूबर में जब ह्यग्रे लिस्टह्व से पाकिस्तान को बाहर किया था, तब उम्मीद बनी थी कि वहां के आम लोगों को महंगाई से निजात दिलाने और अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए शहबाज सरकार ऐसे सुधारवादी कदम उठाएगी, जिससे अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का रुख उसके प्रति कुछ नरम पड़ सके, पर घरेलू राजनीति की उलझनों में ही सरकार की सारी ऊर्जा खत्म होती रही है और अब आलम यह है कि अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष के 6.5 अरब डॉलर के ऋण कार्यक्रम की मियाद इस महीने खत्म होने जा रही है और शहबाज शरीफ को 1.1 अरब डॉलर की किस्त जारी कराने के लिए चिरौरी करनी पड़ रही है। आईएमएफ ने सात महीनों से यह किस्त रोक रखी है। पाकिस्तान के शासक वर्ग को यह बुनियादी हकीकत भी तस्लीम करनी पड़ेगी कि आतंकवाद के निर्यात की प्रच्छन्न नीति से तौबा किए बगैर उनके यहां न निवेश आएगा और न ही वहां पर लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी।

रिश्तों को ऊंचाई

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका की हालिया राजकीय यात्रा को इस मायने में महत्वपूर्ण माना जा रहा है कि इससे उद्योग व व्यापारिक रिश्तों को नये आयाम मिले हैं। दोनों देशों को एक-दूसरे की जरूरत का पता इस बात से चलता है कि पिछले एक दशक में दोनों देशों का व्यापार दुगना और चीन से ज्यादा हो गया है। जो न केवल दोनों देशों बल्कि वैश्विक आर्थिकी के भी अनुकूल है। दरअसल, अमेरिकी मदद से दोस्त से दानव बन अमेरिका को चुनौती दे रहे चीन का विकल्प अमेरिका भारत के रूप में देखता है। यही वजह है कि कुछ मतभेदों के बावजूद अमेरिका भारत को एक भरोसेमंद पार्टनर के रूप में देखता है। इस यात्रा को इस नजरिये से भी कामयाब माना जा सकता है कि जनरल इलेक्ट्रिक तथा हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के मध्य भारत में एफ 414 जेट इंजन निर्माण को लेकर समझौता अंजाम तक पहुंचा है। इन इंजनों का इस्तेमाल स्वदेशी व महत्वाकांक्षी तेजस युद्धक विमानों में किया जा सकेगा। वहीं चीन व पाक सीमा की चौकसी के लिये उन्नत किस्म के ड्रोन हासिल करने के लिये जनरल एटॉमिक्स के साथ करार पर हस्ताक्षर हुए हैं। निस्संदेह, मिसाइल ले जाने में सक्षम इन ड्रोन से चीन से लगती सीमा की सुरक्षा चुनौतियों का मुकाबला किया जा सकेगा। इसके अलावा अन्य महत्वपूर्ण समझौता सेमीकंडक्टर संयोजन व टेस्टिंग सुविधा को लेकर होना है, जिसमें अमेरिकी कंपनी सवा आठ सौ मिलियन डॉलर का निवेश करेगी। निस्संदेह, ये समझौते दोनों देशों के आर्थिक संबंधों को नये आयाम देंगे। साथ ही भारत आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ेगा और रोजगार के तमाम नये अवसर सृजित किये जा सकेंगे। प्रधानमंत्री से अमेरिका यात्रा के दौरान बड़ी संख्या में अमेरिकी कारोबारियों, दुनिया की कई नामी कंपनियों के सीईओ की मुलाकात बताती है कि अमेरिका भारत को बड़े व्यापारिक साझेदार के रूप में देखता है। आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ इस यात्रा को दोनों देशों के संबंधों की यात्रा का मील का पत्थर बता रहे हैं। जिससे तकनीकी साझेदारी को नये आयाम मिलेंगे। वैसे अमेरिका एक विशुद्ध व्यापारी देश है और अपने आर्थिक हितों को लेकर किसी तरह का समझौता नहीं कर सकता है। ऐसे वक्त में जब अमेरिका में यह धारणा बलवती हुई है कि अमेरिका की मदद से ही चीन दुनिया में नंबर एक निर्यातक देश बना है।

आपातकाल और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

ANALYSIS

✍ डॉ. सौरभ मालवीय

12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने निर्णय सुनाया था कि इंदिरा गांधी ने वर्ष 1971 के लोकसभा चुनाव में अनुचित तरीके अपनाए। न्यायालय ने उन्हें दोषी ठहराते हुए उनका चुनाव रद्द कर दिया था। इंदिरा गांधी के चुनाव क्षेत्र रायबरेली से उनके प्रतिद्वंद्वी राज नारायण थे। यद्यपि चुनाव परिणाम में इंदिरा गांधी को विजयी घोषित किया गया था। किन्तु इस चुनाव में पराजित हुए राज नारायण चुनावी प्रक्रिया से संतुष्ट नहीं थे। उन्हों ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में इंदिरा के विरुद्ध याचिका दाखिल करते हुए उन पर चुनाव जीतने के लिए अनुचित साधन अपनाने का आरोप लगाया। उनका आरोप था कि इंदिरा गांधी ने चुनाव जीतने के लिए सरकारी मशीनरी का अनुचित उपयोग किया है। 25 जून 1975 को तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के कहने पर भारतीय संविधान की अनुच्छेद 352 के अधीन आपातकाल की घोषणा कर दी। यह आपातकाल 21 मार्च 1977 तक रहा।

आपातकाल को स्वतंत्र भारत के इतिहास का सबसे विवादास्पद एवं अलोकतांत्रिक काल कहा जाता है। आपातकाल को 48 वर्ष बीत चुके हैं, परन्तु हर वर्ष जून मास आते ही इसका स्मरण ताजा हो जाता है। इसके साथ ही आपातकाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका भी स्मरण हो जाती है। संघ ने आपातकाल का कड़ा विरोध किया था। संघ के हजारों कार्यकर्ता जेल गए थे एवं बहुत से कार्यकताओं ने बलिदान दिया था। उल्लेखनीय है कि 12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने निर्णय सुनाया था कि इंदिरा गांधी ने वर्ष 1971 के लोकसभा चुनाव में अनुचित तरीके अपनाए। न्यायालय ने उन्हें दोषी ठहराते हुए उनका चुनाव रद्द कर दिया था। इंदिरा गांधी के चुनाव क्षेत्र रायबरेली से उनके प्रतिद्वंद्वी राज नारायण थे। यद्यपि चुनाव परिणाम में इंदिरा गांधी को विजयी घोषित किया गया था। किन्तु इस चुनाव में पराजित हुए राज नारायण चुनावी प्रक्रिया से संतुष्ट नहीं थे। उन्हों ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में इंदिरा के विरुद्ध याचिका दाखिल करते हुए उन पर चुनाव जीतने के लिए अनुचित साधन अपनाने का आरोप लगाया। उनका आरोप था कि इंदिरा गांधी ने चुनाव जीतने के लिए सरकारी मशीनरी का अनुचित उपयोग किया है। 25 जून 1975 को तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के कहने पर भारतीय संविधान की अनुच्छेद 352 के अधीन आपातकाल की घोषणा कर दी। यह आपातकाल 21 मार्च 1977 तक रहा। इस समयावधि में नागरिक अधिकारों को स्थगित कर दिया गया। सभी स्तर के चुनाव भी स्थगित कर दिए गए। सत्ता विरोधियों को बंदी बना लिया गया। प्रेस पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। पत्रकार भी बंदी बनाए गए। श्रीमती इंदिरा गांधी के पुत्र संजय गांधी के नेतृत्व में पुरुष नसबंदी अभियान चलाया गया। कहा जाता है कि इस अभियान में अविवाहित युवकों की भी जबरन नसबंदी कर दी गई। इससे लोगों में सत्ता पक्ष के प्रति भारी क्रोध उत्पन्न हो गया। माणिकचंद्र वाजपेयी अपनी पुस्तक आपातकालीन संघर्ष गाथा में लिखते हैं- 'कांग्रेस ने 20 जून, 1975 के दिन एक विशाल रैली का आयोजन किया तथा इस रैली में देवकांतबरुआ ने कहा-'इंदिरा तेरी सुबह की जय, तेरी शाम की जय, तेरे काम की जय, तेरे नाम की जय।' इसी जनसभा में अपने भाषण के दौरान इंदिरा गांधी ने घोषणा की कि वे प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र नहीं देंगी। जयप्रकाश नारायण ने आपातकाल का विरोध किया। उन्होंने इसे 'भारतीय इतिहास की सर्वाधिक काली अवधि' कहा। माणिकचंद्र वाजपेयी आगे लिखते हैं- 'जयप्रकाश नारायण जी ने रामलीला मैदान पर विशाल जनसमूह के सम्मुख 25 जून, 1975 को कहा, 'सब विरोधी पक्षों को देश के हित के लिए एकजुट हो जाना चाहिए अन्यथा यहां तानाशाही स्थापित होगी और जनता दुखी हो जाएगी।' लोक संघर्ष समिति के सचिव नानाजी देशमुख ने वहीं पर उत्साह के साथ घोषणा कर दी, 'इसके बाद इंदिराजी के त्यागपत्र की मांग लेकर गांव-गांव में सभाएं की जाएंगी और राष्ट्रपति के निवास स्थान के सामने 29 जून से प्रतिदिन सत्याग्रह होगा।' उसी संध्या को जब रामलीला मैदान की विशाल जनसभा से हजारों लोग लौट रहे थे, तब प्रत्येक धूलिकण से मानो यही मांग उठ रही थी कि 'प्रधानमंत्री त्यागपत्र दें और वास्तविक गणतंत्र की परम्परा का पालन करें।' आपातकाल के कारण जनता त्राहिमाम कर रही थी। एच वी शेषाद्री की पुस्तक कृतिरूप संघ दर्शन के अनुसार सभी प्रकार की संचार व्यवस्था, यथा- समाचार-पत्र- पत्रिकाओं, मंच, डाक सेवा और निर्वाचित विधान मंडलों को ठप्प कर दिया गया। प्रश्न था कि इसी स्थिति में जन आंदोलन को कौन संगठित करे? इसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता था। संघ का देश भर में शाखाओं का अपना जाल था और वही इस भूमिका को निभा सकता था। संघ ने प्रारम्भ से ही जन से जन के संपर्क की प्रविधि से अपना निर्माण किया है। जन संपर्क के लिए वह प्रेस अथवा मंच पर कभी भी निर्भर नहीं रहा। अतः संचार माध्यमों को ठप्प करने का प्रभाव अन्य दलों पर तो पड़ा, पर संघ पर उसका रंचमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। अखिल भारतीय स्तर के उसके केन्द्रीय निर्णय, प्रांत, विभाग, जिला और तहसील के स्तरों से होते हुए गांव तक पहुच जाते हैं। जब आपात घोषणा हुई और जब तक आपातकाल चला, उस बीच संघ की यह संचार व्यवस्था सुचारू ढंग से चली। भूमिगत आंदोलन के ताने-बाने के लिए संघ कार्यकताओं के घर महानतम वरदान सिद्ध हुए और इसके कारण ही गुप्तचर अधिकारी भूमिगत कार्यकताओं के ठौर ठिकाने का पता नहीं लगा सके। सर संघचालक बालासाहब देवरस को 30 जून को नागपुर स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया। इससे पूर्व उन्होंने आह्वान किया था कि इस असाधारण परिस्थिति में स्वयंसेवकों का दायित्व है कि वे अपना संतुलन न खोयें। सर कार्यवाह माधवराव मुले तथा उनके द्वारा नियुक्त अधिकारी के आदेशानुसार संघ-कार्य जारी रखें तथा यथापूर्व जनसंपर्क, जनजागृति और जनशिक्षा का कार्य करते हुए अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन करने की क्षमता जनसाधारण में निर्माण करें। संघ के स्वयंसेवकों ने उनके आह्वान के अनुसार ही कार्य किया। आपातकाल की घोषणा के कुछ दिन पश्चात 4 जुलाई 1975 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। लोक संघर्ष समिति द्वारा आयोजित आपातकाल विरोधी संघर्ष में एक लाख से अधिक स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह किया। आपातकाल के दौरान सत्याग्रह करने वाले कुल एक लाख 30 हजार सत्याग्रहियों में से एक लाख से अधिक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के थे। मीसा के अधीन जो 30 हजार लोग बंदी बनाए गए, उनमें से 25 हजार से अधिक संघ के स्वयंसेवक थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 कार्यकर्ता अधिकांशतः बंदीगृहों और कुछ बाहर आपातकाल के दौरान बलिदान हो गए। उनमे संघ के अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख श्री पांडुरंग क्षीर सागर भी थे। सत्ता पक्ष के विरुद्ध जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन को संघ के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं ने जारी रखा। मोहनलाल रुस्तगी की पुस्तक आपातकालीन संघर्ष गाथा के अनुसार श्री जयप्रकाश नारायण ने अपनी गिरफ्तारी से पूर्व 'लोक संघर्ष समिति' का आन्दोलन चलाने के लिए 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के पूर्णकालिक कार्यकर्ता श्री नानाजी देशमुख को जिम्मेदारी सौंपी थी। जब नानाजी देशमुख गिरफ्तार हो गए तो नेतृत्व की जिम्मेदारी श्री सुन्दर सिंह भण्डारी को सर्वसम्मति से सौंपी गई। आपातकाल लगाने से उत्पन्न हुई परिस्थिति से देश को सचेत रखने के लिए तथा जनता का मनोबल बनाए रखने के लिए भूमिगत कार्य के लिए संघ के कार्यकर्ता तय किए गए। संघ के स्वयंसेवकों ने सत्ता की नीतियों के विरोध में सत्याग्रह किया। इस कड़ी में 9 अगस्त,1975 को मेरठ नगर में सत्याग्रह किया गया। उसी दिन मुजफ्फरपुर में जगह-जगह जोरदार ध्वनि करने वाले पटाखे फोड़े गए। तत्पश्चात 15 अगस्त,1975 को लाल किले पर जब प्रधानमंत्री भाषण देने के लिए माइक की ओर बढीं उसी समय जनता के बीच से 50 सत्याग्रहियों ने नारे लगाए और पर्चे वितरित किए। इसके पश्चात 2 अक्टूबर को प्रधानमंत्री के सामने महात्मा गांधी की समाधि पर सत्याग्रह किया गया। 28 अक्टूबर, 1975 को राष्ट्रमंडल सांसदों का एक दल जब दिल्ली आया, तब कार्यकताओं ने उन्हें आपातकाल विरोधी साहित्य वितरित किया। 14 नवंबर, 1975 को प्रधानमंत्री के सामने नेहरू की समाधि के पास आपातकाल के विरोध में नारे लगाए गए। 24 नवंबर 1975 को अखिल भारतीय शिक्षक सम्मेलन में प्रधानमंत्री के सामने मंच पर जाकर सत्याग्राहियों ने पर्चे वितरित किए और तानाशाही के विरोध में नारे लगाए। 7 दिसम्बर, 1975 को ग्वालियर में महान संगीतज्ञ तानसेन की समाधि पर सत्याग्रह किया गया। उस दिन रजत जयंती के कार्यक्रम का आयोजन था। 12 दिसम्बर, 1975 को दिल्ली में स्वामी श्रद्धानंद की मूर्ति के सामने सरदार पटेल की बेटी मणिबेन पटेल के नेतृत्व में महिलाओं द्वारा सत्याग्रह किया गया। बंबई की मिलों में मजदूरों द्वारा सत्याग्रह किया गया।

लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

आपातकाल: लोकतंत्र पर जबरदस्त आघात

सत्ता की ताकत का दुरुपयोग कैसे किया जाता है, इसका उदाहरण कांग्रेस सरकार द्वारा 1975 में देश पर तानाशाही पूर्वक लगाया गया आपातकाल है। जिसमें अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार ही समाप्त कर दिया था। इसे एक प्रकार से देश की आजादी को छीनने का दुस्साहसिक प्रयास भी माना जा सकता है। क्योंकि इंदिरा शासन द्वारा देश पर थोपे गए आपातकाल में सरकार के विरोध में आवाज उठाने को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया था। यहां तक कि सरकार ने विपक्ष की राजनीति करने वालों के साथ ही उन समाजसेवियों और राष्ट्रीय विचार के प्रति समर्पित उन संस्थाओं के व्यक्तियों को जेल में ठूंस दिया था, जो सरकार की कमियों के विरोध में लोकतांत्रिक तरीके से आवाज उठा रहे थे। सरकार के इस कदम को पूरी तरह से अलोकतांत्रिक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इंदिरा गांधी की सरकार ने अपनी सरकार के खिलाफ उठने वाली हर उस आवाज को दबाने का प्रयास किया, जो लोकतांत्रिक रूप से भी सही थी। वैसे देखा जाए तो कांग्रेस शासन का यही चरित्र रहा है कि उनके खिलाफ उठने वाली आवाज को किसी भी प्रकार से शांत किया जाए। आज भी कांग्रेस ठीक इसी पद्धति से काम करती हुई दिखाई दे रही है। कांग्रेस में लोकतांत्रिक सिद्धांतों की बलि दी जाती रही है। इसे कांग्रेस का स्वभाव ही माना जा सकता है कि उसने देश को मजबूत करने वाली आवाज को मुखर नहीं होने दिया। इसके विपरीत देश के विरोध में उठने वाली आवाज को बिना सोचे समझे अभिव्यक्ति की आजादी कहकर समर्थन किया। सीधे शब्दों में निरूपित किया जाए तो यही कहा जा सकता है कि कांग्रेस को अपने विरोध में कही गई कोई बात जरा भी पसंद नहीं है। इसी कारण नेशनल हेराल्ड में जब जांच की बात आती है तो कांग्रेस के नेता एकजुट होकर ऐसा प्रदर्शन करते हैं, जैसे वही सही हैं और बाकी सभी गलत। कांग्रेस पार्टी ने एक नहीं कई बार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर राष्ट्र विरोधी ताकतों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन देने काम किया है, लेकिन जो कांग्रेस गाहे बगाहे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की वकालत करती रही है, उसने ही 25 और 26 जून 1975 की रात को आपातकाल लगाने के बाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का पूरी तरह गला घोंट दिया था। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर किस प्रकार कुठाराघात किया जाता है, इस तथ्य को जानने के लिए कांग्रेस के नेताओं को आपातकाल के काले अध्याय का अध्ययन करना चाहिए। आपातकाल के नाम पर कांग्रेस ने अंग्रेजों से भी भयंकर यातनाएं देते हुए देश भक्तों पर कहर बरपाया। जिसके स्मरण मात्र से दिल में सिरहन दौड़ जाती है। जिन लोगों ने इस काली रात का साक्षात्कार किया, उनके अनुभव सुनने मात्र से ही लगता है कि इन्होंने आपातकाल को किस कदर भोगा होगा। आपातकाल लगाने के पीछे के कारणों पर दृष्टिपात किया जाए तो यही तथ्य सामने आते हैं कि उस समय की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पूरी तरह से तानाशाह शासक की भूमिका में दिखाई दीं। उन्होंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश को ठेंगा बताते हुए अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया, यह प्रकार से सत्ता का दुरुपयोग ही था। वह निर्णय क्या था? इसकी जड़ में 1971 में हुए लोकसभा चुनाव था, जिसमें उन्होंने अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी राजनारायण को पराजित किया था, लेकिन चुनाव परिणाम आने के चार साल बाद राज नारायण ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में चुनाव परिणाम को चुनौती दी। 12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जगमोहन लाल सिन्हा ने इंदिरा गांधी का चुनाव निरस्त कर उन पर छह साल तक चुनाव न लड़ने का प्रतिबंध लगा दिया और उनके मुकाबले हारे और श्रीमती गांधी के चिर प्रतिद्वंद्वी राजनारायण सिंह को चुनाव में विजयी घोषित कर दिया था। राजनारायण सिंह की दलील थी कि इंदिरा गांधी ने चुनाव में सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया, तय सीमा से अधिक पैसा खर्च किया और मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए गलत तरीकों का इस्तेमाल किया। न्यायालय ने इन आरोपों को सही ठहराया था। इसके बावजूद श्रीमती गांधी ने प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र देने से इनकार कर दिया और देश में आपातकाल घोषित कर दिया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय के साथ ही गुजरात में चिमनभाई पटेल के विरुद्ध विपक्षी जनता मोर्चे को भारी विजय मिली। इस दोहरी चोट से इंदिरा गांधी बौखला गईं। इन्दिरा गांधी ने न्यायालय के इस निर्णय को मानने से इनकार करते हुए सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने की घोषणा की और 26 जून को आपातकाल लागू करने की घोषणा कर दी गई। इंदिरा गांधी का यह कदम न्यायालय के आदेश का अपमान करने वाला ही था। आपातकाल के नाम पर केवल उन्हीं लोगों को जेल में जबरदस्ती बंद किया था, जो सरकार के विरोधी थे। देश भर में इंदिरा शासन के विरुद्ध जबरदस्त आंदोलन खड़ा किया। आपातकाल में शासन, प्रशासन ने लोकनायक जयप्रकाश के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन में हिस्सा लेने वाले हर उस व्यक्ति को प्रताड़ना दी, जो लोकतांत्रिक तरीके सरकार के विरोध में आवाज उठा रहे थे। विपक्षी राजनेताओं ने देश में केन्द्र सरकार के विरोध में ऐसा वातावरण बनाया कि इंदिरा गांधी को अपना सिंहासन हिलता हुआ दिखाई दिया। जॉर्ज फर्नांडीज को लोहे की जंजीरों से बांधकर यातनाएं दी गईं। देश के जितने भी बड़े नेता थे, सभी के सभी सलाखों के पीछे डाल दिए गए। एक तरह से जेलें राजनीतिक पाठशाला बन गईं। जिन लोगों ने यह दृश्य देखा, उनका यही कहना था कि ऐसा दृश्य तो अंग्रेजों के शासनकाल में भी नहीं दिखा। कहने का आशय यही है कि इंदिरा गांधी ने देश के लोकतंत्र का पूरी तरह से अपहरण कर लिया। इस दौरान जनता के सभी मौलिक अधिकारों को स्थगित कर दिया गया था।

Social Media Corner

सच के हक में...

एक बहुत ही विशेष यूएसए यात्रा का समापन, जहां मुझे भारत-यूएसए मित्रता को गति देने के उद्देश्य से कई कार्यक्रमों और बातचीत में भाग लेने का मौका मिला। हमारे देश अपने ग्रह को आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर स्थान बनाने के लिए मिलकर काम करते रहेंगे।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्विटर अकाउंट से)

झारखंड में लूटतंत्र के संस्थापक, फर्जी मुकदमा मुख्यमंत्री और बिचौलियों - दलालों के साहब भी कल कह रहे थे कि लोकतंत्र पर प्रहार हो रहा है। मतलब, सूप तो सूप छलनी भी बोली जिसमें बहत्तर छेद। झारखंड को लूट का चारागाह बनाने वाले, अरबों रुपये की अवैध संपत्ति, जमीन-जायदाद अर्जित करने वाले, गरीबों - आदिवासियों को सताने वाले, बिचौलियों - दलालों को डकैती करने की खुली छूट देने वाले, माफियाओं - अपराधियों को पोषित करने वाले, सरकारी राजस्व को अरबों रुपये का चूना लगाने वाले, अपने संरक्षण में इतिहास का सबसे बड़ा जमीन घोटाला करवाने वाले लोकतंत्र की दुहाई देकर केंद्रीय जांच एजेंसियां से अपना गला बचाना चाहते हैं।

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के ट्विटर अकाउंट से)

प्राण का तकिया कलाम और गेटअप

अपने किरदारों को यादगार तथा फिल्म इंडस्ट्री में लंबे समय तक अपनी मांग और लोकप्रियता बनाए रखने के लिए प्राण ने अपने मेकअप (रूप सज्जा), गेटअप (वस्त्र सज्जा) और बोलने के ढंग (लहजे) पर विशेष मेहनत तो की ही, यह भी ध्यान रखा कि इनमें दोहराव न हो । इन सब की प्रेरणा वे अपने आसपास के लोगों से लेते या पत्र-पत्रिकाओं में छपी तस्वीरों और उसके विवरण से। बोलने के खास लहजे या तकिया कलामह्व की बात करें तो फिल्म 'पत्थर के सनम (1960) में उनके द्वारा इस्तेमाल किया गया तकिया कलाम था- क्यों? ठीक है ना ठीक? यह तकिया कलाम न्होंने लाहौर में फिल्में करते समय रूप के शौरी के मामाजी से लिया था जो उनके स्टूडियो की देखभाल किया करते थे। फिल्म दस लाख (1966) में उन्होंने अपनी हर बात को दुबारा गलत अंग्रेजी में बोलकर हास्य का पुट भरा तो फिल्म 'कश्मीर की कली' (1964) में 'स' को श बोलकर -शताले, शताले शम्पा कभी तो मेरा शमय भी आएगा' ने भी दर्शकों को खूब हंसाया। फिल्म कसौटी (1974) में की गई नेपाली गोरखे की भूमिका में नेपाली लहजे में बोला गया तकिया कलाम हम बोलेगा तो बोलेंगे कि बोलता है भी काफी लोकप्रिय हुआ था। अपनी खलनायकी को खूंखार और डरावना बनाने के लिए उन्होंने कई फिल्मों में सिगरेट या बीड़ी पीने तथा पान खाने के अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल किया। फिल्म मयार्दा (1971) में उन्होंने जलती हुई सिगरेट को जीभ द्वारा मुंह के अंदर ले जाकर जीभ या होठ जलाए बिना दोबारा उसी तरह होठों पर लाने का करिश्मा किया (आमिर बान ने इस तरीके की नकल फिल्म गुलाम में की)। फिल्म 'दिल तेरा दीवाना' (1962) फिल्म में वह अपने मुंह में दबाई बीड़ी को बोलते समय जीभ के निचले होठ से एक सिरे से दूसरे सिरे तक घुमाते रहते थे। अपनी बेटी के डांस टीचर जो कि विकलांग थे और खास तरीके से चलते थे की नकल उन्होंने 'हीर-रांझा' (1970) में लंगड़े की भूमिका करते हुए की। फिल्म 'चोर के घर चोर (1978) में एक पागल के किरदार के लिए उन्होंने उस पागल का गेटअप लिया जिसे वे बांद्रा में अक्सर देखा करते थे और जो मिलिट्री की पोशाक और उस पर मेडल लगाकर सीटी बजाता रहता था। उनके विग और गेटअप हमेशा कुछ अलग होते थे और दर्शकों को बेहद पसंद आते थे। विश्व प्रसिद्ध हस्तियों के प्रति विशेष आकर्षण के चलते उन्होंने खानदान (1966) फिल्म में हिटलर की तरह छोटी मूछें और बाल रखे। अमर अकबर एंथोनी में उनकी दाड़ी और कपड़े अब्राहम लिंकन जैसे थे। फिल्म जुगनू (1973) में प्रोफेसर की भूमिका के लिए उन्होंने शेख मुजीबुरहमान जैसा मेकअप और गेटअप किया था। यानी उन्हीं के जैसी कुर्ता, विग, मोटे फ्रेम का चश्मा और मूंछें। बाद की फिल्मों निगाहें (1989) में उन्होंने सैम पित्रोदा की तरह दाड़ी और फिल्म जोशीले (1973) में शशि कपूर के ससुर ज्योफ्री कैंडल की तरह दाढ़ी रखी। वेशभूषा की सत्यता के लिए प्राण जिस धर्म का किरदार निभा रहे होते तो उसी समुदाय के किसी भी व्यक्ति से सहयोग लेने में नहीं हिचकते थे। फिल्म 'कसौटी' में उन्होंने एक नेपाली गोरखे की भूमिका के लिए अपने मित्र से गोरखाओं जैसे कपड़े तो मंगाए ही साथ ही उनके द्वारा साथ रखी जाने वाली खुखरी तक मंगाई और उसे शूटिंग में भी ले गए। फिल्म आंसू बन गए फूल (1969) में उन्होंने मोहल्ले के दादा का मराठी किरदार निभाया था। इसके लिए उन्होंने अपने मराठी इलेक्ट्रिशियन से कुछ चुने हुए मराठी शब्द याद कर अपने संवादों में शामिल किए। जिस देश में गंगा बहती है (1960) फिल्म में प्राण ने एक क्रूर डाकू 'राका' की उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी।

I WANT TO SAY...

THE PHOTON NEWS

छात्र जीवन में ही रोजगार की तलाश शुरू हो जाती है। आमतौर पर पारिवारिक ढांचा भी कुछ ऐसा होता है कि माता-पिता भी यह चाहते हैं कि उनके बेटे-बेटी जल्द पढ़-लिखकर कुछ करें ताकि अपना और परिवार की आर्थिक गाड़ी को खींचा जा सके। यह एक सामान्य परिवार की स्थिति होती है। जो लोग संपन्न हैं, उनके लिए संसाधन की समस्या नहीं रहती। कुछ बच्चे की मेहनत तो कुछ संसाधन के उपयोग से काम बन जाता है। नहीं भी बना तो संसाधन और संपन्नता ऐसी होती है कि परिवार को चलाने जैसी कोई समस्या नहीं होती। समस्या उन परिवारों के सामने आती है जो इस उम्मीद में टकटकी लगाए रहते हैं कि किसी तरह बच्चों की शिक्षा को पूरा कराएं ताकि वे रोजगार करने लायक बनें। नौकरी तलाश सकें। ऐसा होता भी है लेकिन सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तक सामने आती है जब उन्हें पता चलता है कि जो सपने दिखाए गए थे, वास्तव में हकीकत कुछ और है। किसी तरह सरकारी नौकरी मिल गई तो मान लिया जाता है कि अब जीवन संवर गया। समस्या निजी क्षेत्र में भ्रमित करनेवाली बातों से है। दरअसल, प्लेसमेंट एजेंसियों की सख्ती से जांच होनी चाहिए। अक्सर सब्जबाग दिखाकर युवाओं को नौकरी दिलाकर दूसरे राज्यों में भेज दिया जाता है। इसे प्रचारित भी खूब किया जाता है लेकिन युवाओं को असलियत का अहसास दूसरे राज्यों में जाकर नौकरी शुरू करने के बाद होता है। जरूरत ऐसा कोई मैकेनिज्म बनाने की है जो इसपर नजर रख सके कि नौकरी या रोजगार दिलानेवाली एजेंसियां क्या कर रही हैं। कैसे कर रही हैं। कहीं लोगों को ठग तो नहीं रही हैं।

अहसान आलम, पत्रकार पाकुड़।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PRIVATE LIMITED, Kathitand, Near Tender Bagicha, P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001.Editor-Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

एशियाई खेल 2023 में पुरुष और महिला क्रिकेट टीमों को भेजेगा बीसीसीआई

-पहले कर दिया था भेजने से मना

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) अपनी पुरुष और महिला क्रिकेट टीमों को आगामी एशियाई खेलों 2023 में शिरकत करने के लिए भेजने को तैयार हो गया है। बीसीसीआई ने पहले एशियाड में अपनी टीमों को भेजने से इनकार किया था। चीन में आयोजित होने वाले एशियाई खेलों में क्रिकेट की प्रतियोगिताएं टी20 फॉर्मेट में खेली जाएगी।

रिपोर्ट के मुताबिक चूंकि जब एशियाई खेलों का आयोजन होगा, तभी भारतीय क्रिकेट टीम अपने घर में वनडे वर्ल्ड कप खेल रही होगी। इसके बाद एशियाड में बीसीसीआई पुरुष वर्ग में अपनी बी टीम भेजेगी। वहीं महिला वर्ग में भारत की टॉप महिला क्रिकेट टीम एशियाड में अपनी दावेदारी पेश करेगी। एशियाई खेलों का आयोजन 23 सितंबर से 8 अक्टूबर तक चीन के हांगजोउ में होगा। वहीं आईसीसी वर्ल्ड कप 5 अक्टूबर से 23 नवंबर तक खेले जाएंगे। बीसीसीआई 30 जून तक खिलाड़ियों की लिस्ट भारतीय ओलंपिक संघ को भेजेगा।

इसके पहले भारतीय बोर्ड ने साल 2010 और 2014 में एशियाई खेलों में अपनी टीम नहीं भेजा था। तब एशियाड में क्रिकेट का इवेंट भी रखा गया था। तब भारत की ना तो पुरुष और ना ही महिला क्रिकेट टीम शिरकत करने पहुंची थी। 2018 जकार्ता एशियाई खेलों में भी क्रिकेट का इवेंट नहीं रखा गया था। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने बर्मिंघम में संपन्न कॉमनवेल्थ गेम्स में हिस्सा लिया था जहां फाइनल में भारत को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हार झेलनी पड़ी थी। टीम को सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा था।

बीसीसीआई ने पहले कहा था कि व्यस्त शेड्यूल की वजह से पुरुष और महिला क्रिकेट टीमें मेगा इवेंट में शिरकत नहीं करेंगी। तब एशियाई खेलों के शेफ डी मिशन भूपेंद्र बाजवा ने कहा था कि भारतीय खिलाड़ी क्रिकेट को छोड़कर सभी खेलों में हिस्सा लेने वाले हैं।

छंद को कजाकिस्तान में मिला कांस्य पदक

धार (एजेंसी)। ग्रेपलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा इसी माह देवास में आयोजित नेशनल ग्रैपलिंग चौंपियनशिप में धार के सुप्रसिद्ध कर सलाहकार दर्पण मंगल के सुपुत्र छंद मंगल ने मध्यप्रदेश की ओर से अंडर फिटीन, 66 किलो ग्राम श्रेणी में खेलते हुए नेशनल विजेता के रूप में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। जिसके परिणाम स्वरुप दिनांक 21 से 24 जून तक कजाकिस्तान के अस्ताना में होने वाली एशियन चौंपियनशिप में इनका चयन हुआ। तथा गत दिवस एशियन चौंपियनशिप में छंद मंगल ने कांस्य पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया है।

छंद ने इस कांस्य पदक का श्रेय अपने दादा दादी,माता पिता, कोच अनुपाल सर, स्कूल तथा मित्रो को दिया है।

इस शुभ अवसर पर गोपाल अग्रवाल, अंक अग्रवाल, निलेश सुगंधी, सुमित नरमदेव, दीपक गुप्ता, सुशील अग्रवाल, शैलेंद्र राठोर, मयूर मित्तल, परमानंद विश्वकर्मा आदि मित्रों ने बधाई दे कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। उक्त जानकारी राजेश नाहर ने प्रदान की।

टी-20 में 10 हजार रन बनने वाले पहले इंग्लिश बल्लेबाज बने जोस बटलर

-रोहित शर्मा के रिकॉर्ड को किया चकनाचूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के व्हाइट बॉल कैप्टन और स्टार बल्लेबाज जोस बटलर ने टी-20 क्रिकेट में खास मुकाम हासिल कर लिया है। इंग्लिश बल्लेबाज ने रोहित के एक बड़े रिकॉर्ड को चकनाचूर कर स्पेशल क्लब में अपनी जगह बना ली है। दरसअल, बटलर ने टी-20 क्रिकेट में 10 हजार रन पूरे कर लिए हैं और वह यह मुकाम हासिल करने वाले इंग्लैंड के पहले बल्लेबाज भी बने हैं। बटलर ने इंग्लैंड की धरती पर खेली जा रही विटेलिटी टी-20 ब्लास्ट टूर्नामेंट में यह खास मुकाम हासिल किया। बटलर ने आतिशी बल्लेबाजी करते हुए मैच में 83 रन की तूफानी पारी खेली। बटलर ने बेहतरीन बैटिंग करते हुए मात्र 39 गेंदों पर 8 चौके और छह छक्कों की मदद से 83 रन बनाए। इस शानदार पारी के दौरान बटलर ने तीन रन बनाते ही टी-20 क्रिकेट में अपने 10 हजार रन पूरे किए। वह यह उपलब्धि हासिल करने वाले दुनिया के 8वें बल्लेबाज बने हैं।

जोस ने टी-20 क्रिकेट में सबसे तेज 10 हजार रन पूरा करने के मामले में भारतीय कप्तान रोहित को पीछे छोड़ दिया है। रोहित ने टी-20 में 10 हजार रन पूरे करने के लिए 362 पारियां खेली थीं। वहीं, बटलर ने यह मुकाम 350वीं पारी में हासिल किया है। बटलर टी-20 क्रिकेट में 10 हजार रन पूरे करने वाले पहले इंग्लिश बल्लेबाज हैं। बटलर के अलावा इंग्लैंड का कोई भी बल्लेबाज टी-20 में 10 हजार रन नहीं जड़ सका है। बटलर की शानदार पारी के दम पर लंकाशायर की टीम ने टी-20 ब्लास्ट टूर्नामेंट में डर्बीशायर पर धमाकेदार जीत दर्ज की। टी-20 क्रिकेट में सर्वाधिक रन जड़ने का रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के बल्लेबाज क्रिस गेल के नाम है।

केएल राहुल और श्रेयस अय्यर के बिना एशिया कप खेलेगा भारत

-दोनों की फिटनेस का लेकर अभी संशय बना हुआ

मुंबई (एजेंसी)। एशिया कप टूर्नामेंट 31 अगस्त से 17 सितंबर तक हाइब्रिड मॉडल पर खेला जाएगा, जिसमें 4 मैच पाकिस्तान में और 9 श्रीलंका में होने हैं। सभी टीमें महाद्वीपीय टूर्नामेंट के लिए तैयारी कर रही हैं। भारत के लिए यह अहम टूर्नामेंट होने वाला है क्योंकि देश इसके बाद में अक्टूबर-नवंबर में वनडे विश्व कप 2023 की मेजबानी को तैयार है। लेकिन जैसे-जैसे ये टूर्नामेंट नजदीक आ रहे हैं, कई प्रमुख खिलाड़ियों की चोट की समस्या के कारण चयनकर्ता को चयन में दिक्कत आ रही है।

खबर आ रही हैं कि भारत को एशिया कप 2023 में दो बड़े खिलाड़ियों के बिना खेलना पड़ सकता है। एक केएल राहुल, दूसरा श्रेयस अय्यर। राहुल मई में हुई जांघ की सर्जरी के लिए पुनर्वास से गुजर रहे हैं। राहुल की भारतीय टीम में वापसी की तारीख अभी भी अज्ञात है और यह संभावना नहीं है कि वह एशिया कप के लिए समय पर वापसी कर पाएंगे। इसके अलावा, मध्यक्रम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर की फिटनेस स्थिति अभी भी पूरी तरह से ज्ञात नहीं है। हाल ही में अय्यर की पीठ की चोट की सर्जरी भी हुई थी। इसके बाद दो महीने के अंदर इनका टीम में जुड़ना मुश्किल लग रहा है।

अगर राहुल व अय्यर बाहर होते हैं, इससे संजू सैमसन के एशिया कप के लिए भारतीय टीम में शामिल होना तय है। विकेटकीपर बल्लेबाज ने भारतीय टीम में वापसी की क्योंकि उन्हें वेस्टइंडीज दौरे के लिए वनडे टीम में नामित किया गया है। ऋषभ पंत अभी भी अपनी दुर्घटना की चोटों से जूझ रहे हैं, अगर राहुल समय पर ठीक नहीं हो पाते हैं, तब भारत 50 ओवर के टूर्नामेंट के लिए ईशान किशन के साथ सैमसन को रख सकता है। भारत वेस्टइंडीज के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज के बाद तीन वनडे मैच खेलेगा। इस वनडे सीरीज से भारत की 50 ओवर के विश्व कप और एशिया कप के लिए तैयारी शुरू हो जाएगी।

दिमित्रोव को हराकर अल्कारेज क्वींस क्लब के सेमीफाइनल में पहुंचे

लंदन। शीर्ष वरीयता प्राप्त कार्लोस अल्कारेज ने क्वींस क्लब टेनिस चैंपियनशिप में पूर्व चैंपियन ग्रिगोर दिमित्रोव को 6-4, 6-4 से हराकर घासियाले कोर्ट पर पहली बार एटीपी टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। क्वालीफाई के जरीये टूर्नामेंट में जगह बनाने 2014 के चैम्पियन दिमित्रोव के खिलाफ अल्कारेज की यह आठ मैचों में आठवीं जीत हैं सेमीफाइनल में उनके सामने सेबस्टियन कॉर्डा की चुनौती होगी। कोर्डा ने ब्रिटेन के कैमरून नॉरी को 6-4, 7-6 से शिकस्त दी। अल्कारेज की तरह वह भी एटीपी टूर्नामेंट में घसियाले कोर्ट पर पहली बार के सेमीफाइनल में पहुंचे है। पिछले 11 साल में इस टूर्नामेंट के अंतिम चार में पहुंचने वाले वह अमेरिका के पहले खिलाड़ी है। दूसरी वरीयता प्राप्त होल्गर रूने शनिवार को दूसरे सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के सातवीं वरीयता प्राप्त एलेक्स डी मिनौर का सामना करेंगे। रूने ने लोरेंजो मुसेटी 6-4, 7-5 जबकि डी मिनौर ने गैर वरीयता प्राप्त फ्रांस के एड्रियन मन्नारिनो 6-4, 4-6, 6-4 से शिकस्त दी।

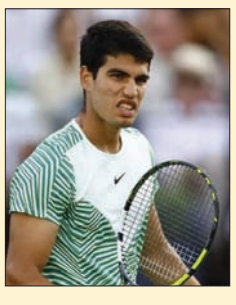

चयनकर्ता बार-बार सरफाज की अनदेखी क्यों कर रहे, जबाब दे

-आकाश चोपड़ा ने वीडियो जारी कर पूछा

नई दिल्ली (ईएमएस)। वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट और वनडे मैचों के लिए भारतीय टीम में खिलाड़ियों के चयन पर कई सवाल उठ रहे हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा वेस्टइंडीज दौरे के लिए टेस्ट और वनडे टीम की घोषणा के बाद, घरेलू सुपरस्टार सरफराज खान की हो रही अनदेखी पर खूब प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। इतना ही नहीं भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज आकाश चोपड़ा भी देखकर हैरान हैं कि रणजी ट्रॉफी के पिछले दो सीजन में ढेरों रन बनाने के बावजूद सरफराज को किनारे रखा गया है।

सरफराज, जो घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं, उन्हें भारतीय टीम में जगह नहीं दी गई। वहीं टीम में यशस्वी जायसवाल और रुतुराज गायकवाड़ जैसे युवा बल्लेबाज जगह बनाने में सफल रहे, जबकि अनुभवी टेस्ट बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा को भारतीय टेस्ट टीम से बाहर का राह दिखाया गया है। आकाश ने एक वीडियो में चयनकर्ताओं पर निशाना साधते हुए कहा कि उन्हें सरफराज को भारतीय टेस्ट टीम मे ना रखने के कारण का खुलासा करना चाहिए क्योंकि बल्लेबाज घरेलू क्रिकेट में सब कुछ सही कर रहा है।

आकाश ने कहा, सरफराज को क्या करना चाहिए? यदि आप पिछले 3 वर्षों में उसके रनों को देखें, तब वह बाकियों से काफी ऊपर है। उसने हर जगह स्कोर किया है। फिर भी, अगर उसका चयन नहीं हुआ... तब इससे क्या संदेश जाता है? उन्होंने कहा, यह पूछने लायक प्रश्न है। यदि कोई अन्य कारण है, कुछ ऐसा है जो आप और मैं नहीं जानते हैं, तब इस सार्वजनिक करें। बस यह कहें कि आपको सरफराज के बारे में वह विशेष बात पसंद नहीं थी और इसीलिए आप उसके नाम पर विचार नहीं कर रहे हैं, लेकिन हमें नहीं पता कि ऐसा कुछ है या नहीं। मुझे नहीं पता कि किसी ने सरफराज को इस बारे में बताया था या नहीं।

भारत कोरिया के खिलाफ एफआईएच जूनियर पुरुष विश्व कप में अभियान शुरू करेगा

कुआलालंपुर (एजेंसी)। भारत 2023 एफआईएच पुरुष हॉकी जूनियर विश्व कप के शुरुआती दिन पांच दिसंबर को ग्रुप सी में दक्षिण कोरिया के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगा। टूर्नामेंट का आयोजन पांच से 16 दिसंबर तक बुकित जलील स्थित नेशनल हॉकी स्टेडियम में होगा। भुवनेश्वर में हुए हुए पिछले विश्व कप (2021) में चौथे स्थान पर रही भारतीय टीम को ग्रुप चरण में अपेक्षाकृत आसान ड्रा मिला है। शनिवार को यहां जारी ड्रॉ के मुताबिक ग्रुप सी में भारत और दक्षिण कोरिया के अलावा स्पेन और कनाडा की टीमें है।

भारतीय टीम ग्रुप चरण में सात दिसंबर को स्पेन जबकि नौ दिसंबर को कनाडा का सामना करेगी। टूर्नामेंट को आधिकारिक तौर पर शनिवार को पुत्रजया के मर्क्योर लिविंग होटल में एक समारोह के दौरान लॉन्च किया गया। मेजबान मलेशिया, गत चैम्पियन अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया और चिली के साथ ग्रुप ए में है, जबकि छह बार की चैम्पियन जर्मनी, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका और मिस्त्र ग्रुप बी में हैं। नीदरलैंड, बेल्जियम, पाकिस्तान और न्यूजीलैंड ग्रुप डी में है।

खेल की शीर्ष संस्था ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि ग्रुप का वर्गीकरण एफआईएच जूनियर विश्व रैंकिंग के आधार पर हुआ है जिसमें दुनिया भर की 16 टीमें प्रतिष्ठित खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी। भारत के उत्तम सिंह ने टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करने का भरोसा जताया। उन्होंने कहा, 'सुल्तान जोहोर कप और जूनियर एशिया कप में जीत के बाद भारतीय टीम का आत्मविश्वास बढ़ा हुआ है। टीम मलेशिया में जूनियर विश्व कप में पोडियम स्थान हासिल करने को लेकर आश्वस्त है।' भारतीय टीम ने 2001 और 2016 में जूनियर विश्व कप विजेता रही है। जर्मनी और अर्जेंटीना के बाद भारत तीसरी टीम है जिसने 1979 में शुरू हुए इस टूर्नामेंट को एक से अधिक बार जीता है।

स्पेशल ओलंपिक में भारतीय खिलाड़ियों का दमदार प्रदर्शन जारी

बर्लिन। बारिश के कारण स्पेशल ओलंपिक के सातवें दिन शुक्रवार को यहां कई आउटडोर खेलों के कार्यक्रम रद्द या स्थगित करने पड़े, लेकिन भारतीय खिलाड़ियों ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखा और रोलर-स्केटिंग में दबदबा बनाया। स्पेशल ओलंपिक विश्व ग्रीष्मकालीन खेलों का आयोजन प्रत्येक चार साल में किया जाता है. जिसमें बौद्धिक अक्षमताओं वाले खिलाड़ी भी हिस्सा लेते हैं। बौद्धिक अक्षमताओं वाले खिलाड़ी वे होते हैं जिनका आईक्यू स्तर 70-75 से कम होता है। बर्लिन में 17 जून को शुरू हुए इन खेलों का आयोजन 25 जून तक होगा। रोलर-स्केटिंग में भारतीय दल ने नौ पदक (3 स्वर्ण, 5 रजत, 1 कांस्य) अपने नाम किये, जिसमें मोहम्मद निसार (30 मीटर स्लैलम) के अलावा आर्यन और अभिजीत शामिल की दो गुणा 100 मीटर रिले ने स्वर्ण पदक जीते। जूडो में भी भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किये। गुरुवार को सुहालिया परवीन के रजत ने इस स्पर्धा में भारत का खाता खोला था जो वहीं शुक्रवार को टीम ने दो और पदक हासिल किये। पुरुष लेवल दो वर्ग में प्रिंस सोलंकी ने कांस्य पदक जीता, जबकि महिला लेवल तीन वर्ग में मुस्कान ने स्वर्ण पदक जीता। टेबल टेनिस में भारत के तीन पदक पक्के किये। यू21-डी3 वर्ग में भारतीय खिलाड़ियों के बीच खेले गये फाइनल में विघ्नेश लोकेश्वर नाइक ने गुनेसिन सिंह बेदी को 3-1 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। महिला एकल 30-डी3 में अलीवेलम्मा गुज्जला पूरे टूर्नामेंट के दौरान अजेय रहते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम करने में सफल रहीं। पावरलिफ्टिंग में अनुराग प्रसाद ने 93 किग्रा वर्ग में बेंच प्रेस में तीन स्वर्ण (स्क्वाट, डेडलिफ्ट, संयुक्त) और एक रजत जीता। भारत ने शुक्रवार तक अपने कुल पदकों की संख्या 96 (स्वर्ण- 33; रजत- 37; कांस्य- 25) तक पहुंचा दी।

पूर्व क्रिकेटर इरफान ने कहा, संजू सैमसन को वनडे टीम में एक बड़ा मौका दिया जाए

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व क्रिकेटर इरफान पठान चाहते हैं कि विश्व कप 2023 से पहले संजू सैमसन को वनडे टीम में एक विस्तारित मौका दिया जाए। सैमसन को केएल राहुल की अनुपस्थिति में भारतीय वनडे टीम में वापस बुलाया गया था। वेस्टइंडीज के खिलाफ सैमसन के मध्यक्रम में खेलने की उम्मीद है। क्योंकि आगे एशिया कप के बाद क्रिकेट विश्व कप भी हैं तब इसके बाद सैमसन के लिए भारतीय टीम में अपनी जगह पक्की करने के लिए यह श्रृंखला महत्वपूर्ण होगी। सैमसन ने 11 एकदिवसीय मैच खेलने के बाद 66 की औसत से रन बनाए हैं। वह दो अर्धशतक लगा चुके हैं। फिलहाल सैमसन के लिए इरफान पठान ने लिखा कि गति और स्पिन दोनों के खिलाफ सैमसन की क्षमताएं भारत के लिए बहुत मददगार हो सकती हैं, जिनके पास इस समय मध्य क्रम में थोड़ी कमी है। पंत की लगातार रिकवरी को देखकर संजू सैमसन को एक दिवसीय क्रिकेट में एक विस्तारित अवसर देने का समय आ गया है। एक कुशल मध्य-क्रम विकेटकीपर-बल्लेबाज के रूप में अपने कौशल और उत्कृष्ट स्पिन-प्लेइंग क्षमताओं के साथ, वह एक मूल्यवान अतिरिक्त साबित हो सकते हैं। सैमसन की बल्लेबाजी कला से भारत के कप्तान रोहित शर्मा भी प्रभावित थे। 2022 में उन्होंने कहा था कि सैमसन ने कुछ शॉट खेले हैं जिन्हें समझाना मुश्किल है। उनका बैक-फुट खेल शानदार है, कुछ शॉट्स आपने आईपीएल के दौरान देखे होंगे, पिक-अप पुल, कट शॉट्स, खड़े होकर गेंदबाज के सिर के ऊपर से गेंद डालना। इस तरह के शॉट खेलना आसान नहीं है और मेरा मानना है कि जब हम ऑस्ट्रेलिया जाते हैं, तब आपको उस तरह के शॉट लगाने की क्षमता की जरूरत होती है और सैमसन में वह क्षमता है। मैं बस यही उम्मीद करता हूं कि वह अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग करें।

मुझे चीजों को सरल रखने के साथ अनुशासित रहना होगा: जायसवाल

मुम्बई (एजेंसी)। वेस्टइंडीज दौरे पर दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला के लिए भारतीय टेस्ट टीम में जगह बनाने वाले बायें हाथ के बल्लेबाज यशस्वी जयसवाल ने शनिवार को कहा कि राष्ट्रीय टीम में चयन की संभावना को लेकर उन्हें घबराहट और रोमांच दोनों का अहसास था। जायसवाल ने पीटीआई-को दिये विशेष साक्षात्कार में कहा कि टेस्ट टीम में उनका नाम देखकर उनके पिता भावुक हो गये थे। उन्होंने कहा, '' मेरे पिता इस खबर को सुनकर रोने लगे थे।'' उत्तर प्रदेश के भदोही से मुंबई आकर आजाद मैदान में एक तंबू में शुरुआती समय बिताने वाले जायसवाल ने कोच ज्वाला सिंह के मार्गदर्शन में अपने खेल में सुधार किया। उनकी प्रतिभा को देखने वालों को यह पता था कि वह भारतीय टीम में जगह बनायेंगे। बस संदेह इस बात पर था कि वह टीम में कब शामिल होंगे लेकिन शुक्रवार को भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने जब टीम की घोषणा की तो इसका जवाब भी मिल गया।

पिछले कुछ वर्षों से घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन करने वाले इस खिलाड़ी ने इस साल इंडियन प्रीमियर लीग में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। उन्होंने कहा कि वह एक-दो दिन में वेस्टइंडीज दौरे की तैयारियों के लिए राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) जायेंगे। जायसवाल विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के दौरान भारतीय टीम के रिजर्व खिलाड़ियों में शामिल थे। उन्होंने कहा, '' मुझे अच्छा महसूस हो रहा है और इसमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश करूंगा।'' उन्होंने कहा, '' मैं उत्साहित हूं लेकिन मैं अपने तरीके से खेलना चाहता हूं।'' राजस्थान रॉयल्स के कोच कुमार संगकारा, इस टीम के उनके साथी ट्रेंट बोल्ट और जो रूट ऐसे दिग्गजों के अलावा भारतीय कप्तान रोहित शर्मा राष्ट्रीय टीम में जायसवाल की दावेदारी का समर्थन कर चुके है। जायसवाल ने कहा कि टीम की घोषणा से पहले वह घबराये हुए थे। उन्होंने कहा, '' मैं थोड़ा घबराया हुआ था, जब तक आपको पता नहीं चलता कि टीम में आपका नाम है तब तक थोड़ी बेचैनी सी होती है।

लेकिन यह अच्छा अहसास है।'' जायसवाल ने कहा कि दौरे की तैयारियों के तहत उन्होंने रोहित, विराट कोहली और अजिंक्य रहाणे जैसे दिग्गज बल्लेबाजों के बातचीत की है। उन्होंने कहा, ''मेरी तैयारी अच्छी है और मैंने कई सीनियर खिलाड़ियों से बात की है। सब के साथ बातचीत में यही बात सामने आयी कि चीजों को सरल रखा जाये। मैंने उनसे काफी कुछ सीखा है लेकिन जब आप मैदान में होते है चीजें आपको ही करनी होती है।'' बल्लेबाजी में पसंदीदा क्रम के बारे में पूछे जाने जायसवाल ने कहा, '' इस बारे में मैं अभी कुछ नहीं बता सकता। हम जब वेस्टइंडीज दौरे पर जाएंगे तभी इसके बारे में पता चलेगा। यह मैच की परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है।'' बाएं हाथ के बल्लेबाज ने कहा कि भारतीय कोच राहुल द्रविड़ ने उन्हें मैच में उन्हीं चीजों पर ध्यान देने के लिए कहा है जो उनके लिए कारगर हो। जायसवाल ने कहा, ''यह सिर्फ सही चीजों पर अपना ध्यान केंद्रित रखने और जो मैं इतने समय से कर रहा हूं उसे करते रहने के बारे में है। मुझे चीजों को सरल रखना है और अनुशासन बनाए रखना है।'' जायसवाल के कोच ज्वाला सिंह भी बहुत उत्साहित है। कोच ने कहा, ''मैंने 2013 में उसे भारतीय टीम का खिलाड़ी बनाने का सपना देखा था और आजाद मैदान से उसे चुना था। मुझे वास्तव में खुद पर गर्व है कि मैंने 10 साल पहले जो शुरू किया था, यह आज फलीभूत हुआ।

स्पेन दौरे से एशियाई खेलों की तैयारी का अवसर मिलेगा : सविता

-जूनियर खिलाड़ियों के पास अपने को साबित करने का अवसर

नई दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी टीम अगले माह जुलाई में स्पेन का दौरा करेगी। भारतीय टीम को इस दौरे में चार देशों के टूर्नामेंट में खेलना है। चार देशों के इस टूर्नामेंट में भारतीय टीम का सामना दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड और मेजबान स्पेन से होगा। भारतीय टीम की कप्तान सविता ने कहा है कि स्पेन दौरे से उनकी टीम को आगामी एशियाई खेलों की तैयारियों को आंकने का अवसर मिलेगा। साथ ही इस दौरे से उनकी टीम को अपनी कमजोरियों का भी पता चलेगा। इस दौरे में जूनियर खिलाड़ी भी अपने को साबित करने का प्रयास करेंगे।

भारतीय टीम स्पेन हॉकी महासंघ के अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट की 100वीं सालगिरह के अवसर पर स्पेन का ये दौरा करेगी। यह टूर्नामेंट 25 से 30 जुलाई के बीच होगा। सविता ने कहा, 'हमारे लिए यह एक अहम टूर्नामेंट है क्योंकि इससे उन पहलुओं के बारे में पता चलेगा जिनमें हमे बेहतर प्रदर्शन करना है। चार देशों के इस टूर्नामेंट में भारतीय टीम का सामना दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड और मेजबान स्पेन से होगा। सविता ने कहा, 'हम इस टूर्नामेंट में शीर्ष टीमों के खिलाफ खेलेंगे जिससे हमें एशियाई खेलों से पहले अपनी तैयारियों को आंकने का अच्छा अवसर मिलेगा। गौरतब है कि एशियाई खेल सितंबर अक्टूबर में चीन के हांगझोउ में होंगे। इसमें स्वर्ण विजेता टीम को अगले साल पेरिस ओलंपिक के लिये सीधे प्रवेश मिलेगा। सुनेलिटा टोप्पो जैसी जूनियर खिलाड़ियों को एशियाई खेलों के लिए 33 सदस्यीय कोर ग्रुप में रखा गया है जो बेंगलुरू में 11 जुलाई तक राष्ट्रीय कोचिंग शिविर में भाग लेंगी।

7 साल बाद निर्देशन में लौटे करण जौहर

ऐ दिल है मुश्किल के बाद करण जौहर ने बतौर निर्देशक 7 साल बाद वापसी की है। उनके द्वारा निर्देशित रॉकी और रानी की प्रेम कहानी का टीजर आज जारी किया गया है। टीजर को शाहरुख खान ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया। करण जौहर की इस फिल्म में जहाँ आलिया भट्ट और रणवीर सिंह नजर आएंगे वहीं दूसरी ओर इस फिल्म में धर्मेन्द्र, जया बच्चन, शबाना आजमी भी अहम भूमिकाओं में दिखाई देंगे। यह करण जौहर स्टाइल की रोमांटिक ड्रामा कहानी है। टीजर को देखते ही दर्शकों को करण जौहर की कई रोमांटिक फिल्मों की याद आ जाती है। रॉकी और रानी के टीजर में फैमिली, ड्रामा, मसाला और रोमांस सब कुछ देखने को मिल रहा है। टीज़र इन शब्दों के साथ शुरू होता है करण जौहर आपको प्यार और परिवार का जश्न मनाने के लिए आमंत्रित करते हैं, दो भावनाएँ जो अब हर धर्मा फिल्म का पर्याय बन गई हैं। टीजर प्रदर्शन के साथ ही वायरल हो गया है। यह सबको पसन्द आने वाला है। यह फिल्म इस वर्ष 28 जुलाई को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होने जा रही है। इस फिल्म के साथ करण फिल्ममेकर के तौर पर अपने बॉलीवुड में 25 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। उनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म कुछ-कुछ होता है 1998 में प्रदर्शित हुई थी। शाहरुख खान ने भी रॉकी और रानी का टीजर अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया है। किंग खान ने टीजर को शेयर करते हुए करण जौहर की तारीफ भी है। शाहरुख ने लिखा, वॉव करण एक फिल्ममेकर के तौर पर आपने 25 साल पूरे कर लिए। तुमने एक लंबा रास्ता तय कर लिया। तुम्हारे पिता और और मेरे टॉम अंकल स्वर्ग से इसे देख रहे होंगे और बेहद खुश और गर्व महसूस कर रहे होंगे। मैंने हमेशा आपको ज्यादा फिल्में बनाने के लिए कहा है क्योंकि हमें प्यार के जादू को जीवन में लाने की जरूरत है। ये सिर्फ आप ही कर सकते हो। रॉकी और रानी की प्रेम कहानी का टीजर खूबसूरत दिख रहा है। आपको ढेर सारा प्यार, कास्ट और क्रू को शुभकामनाएं। शाहरुख के इस प्यारे नोट पर करण ने रिप्लाई करते हुए लिखा, 'भाई आई लव यू। अभी और हमेशा के लिए।' आपको बता दें कि करण रॉकी और रानी की प्रेम कहानी के साथ आलिया और रणवीर की जोड़ी को एक बार फिर स्क्रीन पर लाने के लिए बिल्कुल तैयार हैं।

फिल्म हिंदी-विंदी एनआरआई दर्शकों के सामने हिंदी को सबसे आगे लाई: नीना गुप्ता

बॉलीवुड अभिनेत्री नीना गुप्ता जल्दी ही फिल्म हिंदी-विंदी में नजर आएंगी। उनका कहना है कि यह फिल्म एनआरआई दर्शकों के सामने हिंदी को सबसे आगे लाती है। फिल्म एनआरआई के इर्द-गिर्द बनी है, जिन्होंने वैश्विक मंच पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। एक्ट्रेस इस फिल्म में दादी की भूमिका निभाएंगी, जो ऑस्ट्रेलिया में अपने पोते कबीर से मिलने जाती हैं। फिल्म एक ऑस्ट्रेलियाई-भारतीय लड़के के परिवर्तन के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसमें दिखाया जाएगा कि वह कैसे हिंदी सीखता है और कैसे वह अपनी सांस्कृतिक पहचान को अपनाता है। फिल्म में नीना गुप्ता दादी, मिहिर आहूजा कबीर के रूप नजर आएंगे। नीना गुप्ता ने फिल्म में अपनी भूमिका के बारे में बात करते हुए कहा, मैं फिल्म हिंदी-विंदी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए खुश हूं। हिंदी मेरे दिल के करीब है और यह फिल्म हिंदी को एनआरआई दर्शकों के सामने लाती है। मैं युवा और प्रतिभाशाली फिल्म निर्माताओं अली, जयंत और अनिकेत के साथ काम करने के लिए उत्सुक हूं। टीम को दिलचस्प कहानियां सुनानेका शौक है। मैं ऑस्ट्रेलिया में शूटिंग को लेकर उत्साहित हूं। फिल्म का निर्देशन अली सईद करेंगे। इसकी पटकथा जय शर्मा ने लिखी है। फिल्म की शूटिंग ऑस्ट्रेलिया में होगी। हिंदी विंदी फिल्म का निर्माण अनिकेत देशकर करेंगे। जावेद-मोहसिन संगीत देंगे। ऑस्ट्रेलियाई फिल्म प्रोडक्शन 24सिक्स फिल्म्स, भारत स्थित शाह एंटरटेनमेंट मीडिया (एसईएम) द्वारा निर्मित और स्क्रीन ऑस्ट्रेलिया द्वारा समर्थित, यह फिल्म मई, 2024 में रिलीज होगी।

अचानक मिली थी एनिमल

श्रीवल्ली की भूमिका में दर्शकों का मन मोह लेने वाली एक्ट्रेस रश्मिका मंधाना इन दिनों पुष्पा 2 की शूटिंग के लिए हैदराबाद में हैं। उन्होंने में मंगलवार को अपनी आने वाली फिल्म एनिमल के बारे में बताया जिसकी शूटिंग सोमवार को पूरी हुई है और जिसका निर्देशन संदीप रेड्डी वंगा ने किया है। एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम पर स्टोरीज में एनिमल के बारे में एक भावुक नोट लिखा है। उन्होंने लिखा, डीयर डायरी, आज, हम्म्म्म नहीं एक्चु अली कल रात मैंने नाइट शूट किया और मैंने शूटिंग पूरी की। मैं हैदराबाद वापस आ गई हूं और आज रात पुष्पा 2 की शूटिंग शुरू करूंगी। लेकिन उससे पहले मैं यह बताना चाहती हूं कि एनिमल के सेट पर काम करके मुझे कितना अच्छा लगा। उन्होंने बताया कि यह फिल्म उन्हें अचानक मिल गई। जितना ही यह अचंभित करने वाला था उतना ही वह एनिमल को लेकर बहुत-बहुत उतसाहित हैं। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि मैंने इस फिल्म के लिए 50 दिन से ज्यादा शूट किया है और अब जब शूटिंग पूरी हो गई है तो एक खालीपन सा है। सेट पर मैंने जिनके साथ काम किया पूरी टीम इतनी प्रोफेशनल थी, और इसके बावजूद इतनी नरम दिल थी कि मैंने उनसे बार-बार कहा कि मैं उनके साथ हजार बार और काम करना चाहूंगी और फिर भी मुझे खुशी होगी। उनके लिए मेरे दिल में हमेशा खास जगह रहेगी। रश्मिका ने फिल्म के डायरेक्टर संदीप रेड्डी वंगा की जमकर तारीफ करते हुए कहा कि कल को फिल्म या फिल्म में उनकी एक्टिंग यदि लोगों को पसंद आती है तो इसका पूरा श्रेय डायरेक्टर को जाता है। उन्होंने अपने साथी कलाकार रणबीर कपूर के बारे में कहा कि वह पहले उनके साथ काम करने को लेकर सुपर नर्वस थी, लेकिन.. भगवान ने उन्हें परफेट बनाने में पूरा समय दिया है। ..वह ब्रिलिएंट एक्टर और अमेजिंग इंसान हैं। एनिमल के सेट से लीक फोटो के बाद दर्शक रश्मिका और रणबीर की नई जोड़ी को फिल्म में देखने के लिए उत्साहित हैं। एक्ट्रेस ने बताया कि फिल्म जल्द ही रिलीज होने वाली है। उन्होंने अमिताभ बच्चन और अनिल कपूर की भी जमकर तारीफ की।

धर्मेंद्र और जया बच्चन के साथ

पहली बार नजर आएंगे रणवीर सिंह- आलिया भट्ट

फिल्म रॉकी और रानी की प्रेमकहानी से जाने माने फिल्म मेकर करण जौहर पांच साल बाद निर्देशन में वापसी कर रहे हैं। एक दिन पहले यानि 5 जुलाई को करण जौहर ने इस बात की जानकारी दी थी कि वह छह जुलाई को अहम घोषणा करने वाले हैं। वादे के मुताबिक करण जौहर ने अपनी नई फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी की घोषणा की और बता दिया कि यह फिल्म अगले साल सिनेमाघरों में रिलीज होगी। करण जौहर के निर्देशन में बनने वाली फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में गली बॉय फेम रणवीर सिंह और आलिया भट्ट एक बार फिल्म में लीड रोल में होंगे। संयोग की बात है कि करण जौहर की यह फिल्मरणवीर सिंह के जन्मदिन के मौके पर ही अनाउंस हुई है। यह फिल्म केवल इसलिए खास नहीं है कि इसमें रणवीर सिंह और आलिया अपोजिट नजर आएंगे जबकि इसलिए भी बेहद खास है कि हिंदी सिनेमा के दिग्गज धर्मेंद्र, जया बच्चन, और शबाना आजमी भी इस फिल्म में नजर आएंगे। खुद रणवीर सिंह ने इस बात की पुष्टि की है।रणवीर ने रॉकी और रानी की प्रेम कहानी की कास्ट का एक टीजर पोस्ट करते हुए लिखा- धर्मेंद्र, जया बच्चन और शबाना आजमी के साथ स्क्रीन शेयर करना गौरव की बात है। इस फिल्म में रणवीर सिंह और आलिया भट्ट एक बार फिर अपोजिट होंगे और एक दूसरे से इश्क लड़ाएंगे। यह पहला मौका होगा जब धर्मेंद्र, जया बच्चन के साथ रणवीर सिंह और आलिया भट्ट पर्दे पर एक ही फिल्म में नजर आएंगे। जानकारी के अनुसार, फिल्म में धर्मेंद्र और शबाना आजमी आलिया भट्ट के ग्रैंडपैरंट्स का किरदार निभाएंगे, वहीं जया बच्चन रणवीर सिंह की ग्रैंडमदर की भूमिका में नजर आएंगी।

रोमांस की कोई उम्र नहीं होती पर यंग जनरेशन को यह समझ नहीं आएगा

नवाजुद्दीन सिद्दीकी की अगली फिल्म 'टीकू वेड्स शेरू' है। फिल्म के ट्रेलर में 49 साल के नवाज अपनी 21 वर्षीय को-एक्ट्रेस अवनीत कौर को किस करते हुए नजर आए। इसके बाद से ही उन्हें खूब ट्रोल किया जा रहा है। अब इस लिप-लॉक सीन पर अपना बचाव करते हुए नवाज ने एक बयान दिया है। एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि यंग जनरेशन में अब रोमांस नहीं बचा है और वो नक्ली हो गई है। एक इंटरव्यू में नवाज ने कहा, 'रोमांस की कोई उम्र नहीं होती। यह ऐजलेस होता है पर आज की यंग जनरेशन में रोमांस नाम की चीज नहीं बची है। यही वजह है कि शाहरुख खान जैसे सेलेब्स आज भी रोमांटिक रोल कर रहे हैं। नवाज ने आगे कहा कि आज की जनरेशन सोशल मीडिया वाली जिंदगी जी रही है। चाहे वो किसी से प्यार करना हो या किसी से ब्रेक अप करना। यंग जनरेशन यह सब-कुछ ऑनलाइन ही कर लेती है। इसके पीछे कोई कारण नहीं होता। जिन लोगों ने रोमांस को जिया है वो ही रोमांस करना जानते हैं। नवाजुद्दीन बोले, 'हम उस दौर से हैं जब रोमांस का मतलब कुछ और ही होता था। हम सालों तक इश्क में रहते थे। आज शाहरुख खान को रोमांटिक रोल करने पड़ते हैं क्योंकि यंग जनरेशन नक्ली है। उन्हें रोमांस के बारे में कुछ पता ही नहीं। अवनीत की डेब्यू फिल्म है 'टीकू वेड्स शेरू' वर्क फ्रंट की बात करें तो नवाज हाल ही में 'जोगीरा सारा रा रा' में नेहा शर्मा के अपोजिट नजर आए थे। उनके पास फिलहाल 'हड्?डी' और 'नूरानी चेहरे' जैसी फिल्में हैं। वहीं दूसरी तरफ फिल्म 'टीकू वेड्स शेरू' अवनीत कौर की बॉलीवुड डेब्यू फिल्म है। यह 23 जून को ओटीटी पर रिलीज होगी।

कंधार में एंट्री शॉट मेरे लिए सबसे कठिन सीन्स में से एक: अली

जेरार्ड बटलर और अली फजल स्टारर हॉलीवुड एक्शन-स्पाई थ्रिलर फिल्म कंधार में कई तरह के एक्शन सीक्वेंस हैं। इसमें बहुत सारे स्टंट वर्क हैं। अली के कई स्टंट सीन थे और इनमें से एक स्टंट बहुत मुश्किल था। स्टंट की शूटिंग के बारे में बताते हुए, अली फजल ने कहा- कंधार की शूटिंग के दौरान मुझे सबसे कठिन सीन्स में से एक की शूटिंग याद है और मुझे लगता है कि मेरे लिए सबसे आइकोनिक शॉट मेरी एंट्री थी। इस सीन में एक हेलिकॉप्टर समुद्र के ऊपर उड़ रहा है। और उसके उतरने से ठीक पहले मैंने दरवाजा खोला और बाहर कूदा। फिर चलती हुई वैन में बैठ गया। यहां हम भाग जाते हैं और फिर वैन घाटी में जाती है और रुक जाती है। मैं वैन से उतरता हूं और बाइक पर बैठ जाता हूं। इस सीन में मुझे रेत पर चलती हुई बाइक से टर्न लेते समय उतरना है और फिर दूसरी दिशा में भागना है। उन्होंने आगे कहा और वह शायद सबसे कठिन शॉट्स में से एक था जिसका मैं फिल्म में हिस्सा था। यह सब बैक टू बैक था, रेत पर चलती बाइक पर सीधा रास्ता रखना सबसे कठिन था। मैं अपना संतुलन बनाए रखने और बाइक को स्थिर रखने की कोशिश कर रहा था। जिस तरह से यह बनी उससे मैं खुश हूं। 70 मिलियन डॉलर के अनुमानित बजट पर बनी हॉलीवुड प्रोडक्शन, फिल्म में जेरार्ड बटलर, ट्रैविस फिमेल, अली फजल, टॉम राई हैरीज, फरहाद बागेरी, ओलिविया-माई बैरेट और नावीद नगबान जैसे कलाकार हैं। फिल्म रिक रोमन वॉ द्वारा निर्देशित है। अली फजल ने फिल्म में खलनायक पाकिस्तानी एजेंट और तालिबान के सहयोगी काहिल नासिल का किरदार निभाया है।

करीना कपूर-तब्बू की फिल्म द क्रू में हुई कपिल शर्मा की एंट्री

बॉलीवुड की खूबसूरत एक्ट्रेसेस करीना कपूर खान, तब्बू और कृति सेनन जल्द ही फिल्म द क्रू में साथ नजर आने वाली हैं। इस फिल्म का निर्माण वीरे दी वेडिंग की सुपर-हिट निर्माता जोड़ी, एकता आर कपूर और रिया कपूर द्वारा किया गया है। यह फिल्म स्ट्रगलिंग एयरलाइन इंडस्ट्री की पृष्ठभूमि पर आधारित द क्रू एक मजेदार कॉमेडी होगी। वहीं अब द क्रू में कॉमेडी किंग कपिल शर्मा की भी एंट्री हो गई है। तब्बू ने इस खबर को अपने सोशल मीडिया अकाउंट के जरिए शेयर किया है। उन्होंने कपिल शर्मा का फिल्म में वेलकम करते हुऐ पोस्ट लिखा है। इस फिल्म में कपिल शर्मा स्पेशल भूमिका में नजर आने वाले हैं। तब्बू ने कपिल शर्मा के साथ सेल्फी पोस्ट करते हुए लिखा, आप आए बहार आई। फिल्म द क्रू का हिस्सा बनने के लिए दिल की गहराइयों से आपका धन्यवाद कपिल। आपके शो में होने से लेकर आपको मेरे सह-कलाकार के रूप में देखना मेरे लिए हमेशा एक खुशी की बात रही है। खबरों के अनुसार कपिल ने द क्रू की शूटिंग भी शुरू कर दी है। इस फिल्म की शूटिंग के बाद कपिल शर्मा अपने लाइव शो के लिए यूएस रवाना होंगे, जो जुलाई में होने वाला है।

टैलेंट और आउटसाइडर को फिल्म इंडस्ट्री में लाने पर फोकस कर रही हूं : कंगना

एक्ट्रेस -फिल्ममेकर कंगना रनौत ने अपने प्रोडक्शन की आने वाली फिल्म टीकू वेड्स शेरू में अवनीत कौर जैसे नए चेहरे को लेने के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि वह वास्तव में प्रतिभा और बाहरी लोगों को फिल्म इंडस्ट्री में लाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

जब कंगना रनौत से अवनीत कौर जैसी आउटसाइडर और न्यूकमर को लॉन्च करने के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, हां, मैं एक न्यूकमर को लॉन्च कर रही हूं, मैं एक प्रोड्यूसर के रूप में पैसों पर फोकस नहीं कर रही हूं, मैं वास्तव में टैलेंट और आउटसाइडर को फिल्म इंडस्ट्री में लाने पर ध्यान केंद्रित कर रही हूं। कंगना ने कहा, हां, मैं अवनीत कौर के साथ फिर से काम करना चाहती हूं, लेकिन मैंने कोई फिल्म कॉन्ट्रैक्ट नहीं किया है, जो कि किसी भी न्यूकमर के साथ आम बात है। कंगना ने कहा कि वह नहीं चाहती कि वे झुकें और उनके पास आएं या उनके लाइफ को कोई कंट्रोल करे। अवनीत को लॉन्च करने पर, कंगना ने कहा- उसे मेरा सारा प्यार और आशीर्वाद है और वह अपने सपनों के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र है। साथ ही भविष्य में मैं जिसे भी लॉन्च करूंगी, उनके जीवन और करियर को नियंत्रित करने की कोशिश नहीं करुं गी। नवाजुद्दीन शेख और अवनीत कौर पहली बार टीकू वेड्स शेरू के जरिए एक साथ नजर आएंगे। प्राइम वीडियो पर डेब्यू करने वाली यह फिल्म कंगना रनौत की मणिकर्णिका फिल्म्स द्वारा समर्थित है।